

Associate Partner



Organized by



Supported by



सत्यमेव जयते
Ministry of Ayush
Government of India

राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव 2025 National Ayurveda Festival 2025

आयुश्च महोत्सव 2025™

12 13 14 December 2025

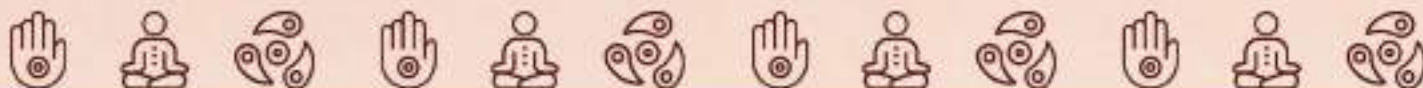
Official Souvenir | आधिकारिक स्मारिका

Ancient Wisdom | Modern Science | Global Wellness

Venue: Indradhanush Auditorium - Panchkula, Haryana

Organized by: Ayur Vaidya Eduhealth Foundation

(A Section 8 Company registered under the Ministry of
Corporate Affairs, Government of India)



PROGRAMME OVERVIEW

Section I | Leadership, Policy & Strategic Vision

1. Messages from Distinguished Dignitaries
2. Message from the Chief Guest – Hon'ble Governor of Haryana
Ayurveda as a Strategic National and Global Health Resource
3. Messages from Guests of Honour
4. Institutional Vision Statement
5. Message from the Festival Chairperson
6. Message from the Festival Patron
7. Message from the Festival Mentor

Section II | National Ayurveda Festival: Conceptual Framework

8. Genesis of the National Ayurveda Festival
9. Core Objectives of Ayur Mahotsava 2025
10. Event Philosophy, Vision & Expected Outcomes
11. Festival Overview

Section III | Inaugural Proceedings & Ceremonial Highlights

12. Inaugural Ceremony
13. Presidential Address & Keynote Presentations
14. Special Address by the Hon'ble Governor

Section IV | National Ayurveda Festival Proceedings

15. Conference Overview & Scientific Framework
16. Structured Scientific Address (Day-wise Proceedings)
17. Thematic Panels, Clinical Demonstrations & Policy Dialogues
18. Distinguished Expert Lectures & Strategic Interventions

Section V | Scientific Research Presentations

19. Oral Scientific Paper Presentationst
(Clinical, Experimental and Literary Research)

- 20. Poster Presentation Sessions
- 21. Research Methodologies & Emerging Scientific Insights
- 22. Best Scientific Paper & Poster Awards

Section VI | Ayurveda Startup & Innovation Conclave

- 23. Introduction & Strategic Context
- 24. Traditional Invocation
- 25. Structure and Format of the Conclave
- 26. Startup Pitch Presentations
- 27. Innovation in Ayurveda: Emerging Dimensions
- 28. Ayurveda Startup & Innovation Conclave Highlights
- 29. Policy and Ecosystem Alignment
- 30. Outcomes and Way Forward

Section VII | Ayurveda Industry & Policy Dialogue

- 31. Context and Purpose
- 32. Functional Structure of the Dialogue
- 33. Stakeholder Representation
- 34. Panel Participation Record
- 35. Industry – Academia – Government Interface

Section VIII | National Ayurveda Exhibition

- 38. Context and Purpose
- 39. Structural Design
- 40. Participation Profile
- 41. Brand Partners of the Exhibition
- 42. National and Regional Ayurvedic Manufacturers
- 43. Traditional Knowledge & Herbal Enterprises
- 44. Academic and Knowledge Platforms
- 45. Functional Demonstration Areas
- 46. Visitor Engagement & Participation
- 47. Sectoral Outcomes

Section IX | Honours, Awards & Recognition

- 48. National Ayurveda Excellence Awards
- 49. Recognition of Eminent Vaidyas & Thought Leaders
- 50. Young Researcher & Innovation Awards

Section X | Organisational Structure & Governance

- 51. Vision
- 52. Mission
- 53. The Organising Institution
- 54. Organising Leadership

Section XI | Media, Outreach & Documentation

- 56. Media Coverage and Public Outreach
- 57. Media Coverage of the Pre-Event Institutional Press Conference
- 58. Media Coverage of the National Ayurveda Festival
- 59. National and International Participation
- 60. Photographic Documentation of the Festival
- 61. Delegate Reflections and Institutional Perspectives

Section XII | Valedictory Proceedings & Future Roadmap

- 62. Valedictory Ceremony Proceedings
- 63. Strategic Recommendations and Future Roadmap

Annexures

- 64. Our Sponsors & Partners
- 65. National Ayurveda Festival & Expo 2025

AYUR VAIDYA
FOUNDATION

Section I

Leadership, Policy & Strategic Vision

Letter from Hon'ble Minister of AYUSH, Government of India

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
आयुष मंत्रालय और
राज्य मंत्री
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार



प्रतापराव जाधव
PRATAPRAO JADHAV

Minister of State
(Independent Charge) of
Ministry of Ayush and
Minister of State in
Ministry of Health and Family Welfare
Government of India



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि आगामी 12-14 दिसम्बर, 2025 को हरियाणा के पंचकुला में राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव - आयुर्महोत्सव, 2025 का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए एक स्मारिका का भी प्रकाशन हो रहा है।

आयोजन समिति की यह अद्वितीय पहल है जिसमें 3500 से अधिक प्रतिष्ठित आयुर्वेद विद्वान, चिकित्सक, शोधकर्ता एवं छात्र एक ही मंच पर एकत्रित हो रहे हैं, न केवल हमारे पारंपरिक स्वास्थ्य तंत्र को सुदृढ़ करने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य में भारत के योगदान को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएगी। विद्वानों एवं विशेषज्ञों का यह संगम आयुर्वेद की शाश्वत प्रासंगिकता का प्रमाण है तथा प्रमाण-आधारित एकीकृत स्वास्थ्य सेवाओं के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

आयुष मंत्रालय को ऐसे नवाचारपूर्ण प्रयासों पर गर्व है जो शैक्षणिक उत्कृष्टता, नैदानिक अनुसंधान, उद्यमशीलता के संवर्धन तथा आयुर्वेद के माध्यम से जनस्वास्थ्य जागरूकता को सशक्त बनाते हैं। मुझे विश्वास है कि इस प्रतिष्ठित आयोजन की संकल्पना एवं सफल क्रियान्वयन में आपका निरंतर परिश्रम और दूरदर्शी नेतृत्व निस्संदेह ज्ञान-विनिमय, शोध सहयोग और नीति-निर्माण के लिए एक ऐतिहासिक मंच प्रदान करेगा।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय की ओर से मैं आपको, आपकी समर्पित टीम एवं आयुर्महोत्सव 2025 के सभी प्रतिभागियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मेरी कामना है कि यह महोत्सव आयुर्वेद के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करे, परंपरा एवं आधुनिक विज्ञान के मध्य सेतु का निर्माण करे।

इस भव्य आयोजन की पूर्ण सफलता हेतु शुभेच्छाएँ।


(प्रतापराव जाधव)

19, सितम्बर, 2025
नई दिल्ली

सही आहार, समय सही, स्वस्थ जीवन का आधार यही

Room No. : 101, Ayush Bhawan, 'B' Block, GPO Complex, INA, New Delhi-110023

Tel : 011-24651955, 011-24651935 E-mail : minister-ayush@nic.in

Room No. 250-A, Nirman Bhawan, Maulana Azad Road, New Delhi-110011, Tel. : 011-23061551, 23061016

Residence : 23, Ashoka Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23740412, 23345478, Fax : 011-23740413

Letter from Hon'ble Chief Minister of Uttar Pradesh

योगी आदित्यनाथ



मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

पत्र संख्या-394/सि.प्र.सं.जीएन/2025
लोक भवन,

लखनऊ - 226001

दिनांक :

14 OCT 2025

संदेश

!!शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्!!

आयुर्वेद न केवल हमारे स्वास्थ्य का आधार है, बल्कि यह मानव जीवन के सशक्तिकरण और सामाजिक कल्याण का मार्गदर्शक भी रहा है। आयुर्वेद का उद्देश्य है "स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं" अर्थात् स्वास्थ्य का संवर्धन और रोगों का निवारण। इसके सिद्धांतों की शक्ति में विश्वास और भारत में जड़ी-बूटियों की प्रचुर उपलब्धता, इस वैज्ञानिक चिकित्सीय पद्धति के अस्तित्व के पीछे हमेशा से एक प्रमुख कारण रहे हैं। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान, शिक्षा और व्यावहारिक अनुभवों का साझा करना अत्यंत आवश्यक है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 'आयुर वैद्य फाउंडेशन' द्वारा आगामी 12-13-14 दिसंबर, 2025 को इंद्रधनुष ऑडिटोरीअम, पंचकुला, हरियाणा में 'राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव-आयुर महोत्सव 2025' का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव में देशभर से पांच हजार से अधिक आयुर्वेद चिकित्सक और सौ से अधिक औषधि निर्माता सम्मिलित होंगे।

ऐसे प्रयास अत्यंत सार्थक एवं प्रेरणादायी हैं। मुझे विश्वास है कि यह महोत्सव आयुर्वेद चिकित्सकों, विद्वानों और औषधि निर्माता संस्थाओं के मध्य ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान का एक उत्कृष्ट मंच साबित होगा। इससे समाज में स्वास्थ्य संवर्धन और आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार में नई ऊर्जा आएगी।

मैं 'आयुर वैद्य फाउंडेशन' को इस आयोजन की सफलता और समृद्धि हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि देशभर के चिकित्सक एवं विशेषज्ञ इस महोत्सव से प्रेरणा लेकर समाज हित में अपनी सेवाएं उत्कृष्ट रूप से प्रदान करेंगे।


(योगी आदित्यनाथ)

प्रति,
डॉ० ऋषभ दीक्षित
अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव
नई दिल्ली

Letter from Hon'ble Chief Minister of Haryana

नायब सिंह
NAYAB SINGH



मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।

CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH

Dated 12-11-2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आयुर्वेद फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 12 से 14 दिसंबर, 2025 तक इंद्रधनुष ऑडिटोरियम, पंचकूला में "आयुर्वेद महोत्सव-2025" का आयोजन किया जा रहा है।

आयुर्वेद भारत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति ही नहीं, बल्कि यह जीवन का एक समग्र विज्ञान है जो स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारियों से बचाव पर केंद्रित है। यह केवल उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य के संतुलन के लिए आहार, जीवनशैली और प्राकृतिक उपचार जैसे योग, ध्यान और जड़ी-बूटियों का बेजोड़ संगम भी है। आज जब विश्व पुनः प्राकृतिक और पारम्परिक उपचार पद्धतियों की ओर लौट रहा है, ऐसे में आयुर्वेद की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है।

हरियाणा सरकार भी विभिन्न प्रकार की चिकित्सा प्रणालियों को एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराने के लिए आयुष सेवाओं को एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली के साथ एकीकृत करके वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा दे रही है। वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों में शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कुरुक्षेत्र में श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पंचकूला में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) स्थापित किया जा रहा है।

मैं "आयुर्वेद फाउंडेशन" द्वारा आयोजित महोत्सव के सफल आयोजन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।


(नायब सिंह)

Letter from Hon'ble Governor of Punjab

Gulab Chand Kataria

Governor of Punjab
and
Administrator
Union Territory, Chandigarh



Raj Bhavan, Punjab
Chandigarh-160019

31 अक्टूबर 2025

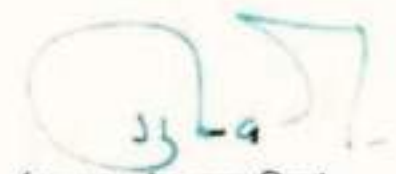
संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आयुर वैद्य फाउंडेशन द्वारा पंचकुला, हरियाणा में 12 से 14 दिसंबर, 2025 तक राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव "आयुर महोत्सव-2025" का आयोजन किया जा रहा है।

भारत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद केवल रोग उपचार की विधा नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन, संतुलित विचार और आध्यात्मिक समृद्धि का जीवनदर्शन है। यह हमारे सांस्कृतिक गौरव और वैज्ञानिक दृष्टि का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। इस महोत्सव के माध्यम से आयुर वैद्य फाउंडेशन द्वारा देशभर के विद्वानों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं को एक मंच पर एकत्र करने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "आयुर महोत्सव-2025" ज्ञान, नवाचार और जनजागरण का ऐसा सशक्त माध्यम बनेगा, जो आने वाली पीढ़ियों को आयुर्वेद की समग्रता और वैज्ञानिकता से परिचित कराएगा।

मैं इस महोत्सव की पूर्ण सफलता एवं इसके सार्थक आयोजन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।



(गुलाब चंद कटारिया)

प्रति,
डॉ० ऋषभ दीक्षित
अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव
नई दिल्ली

Letter of Hon'ble Governor of Himachal Pradesh

शिव प्रताप शुक्ल

राज्यपाल

हिमाचल प्रदेश

राज भवन, शिमला



Shiv Pratap Shukla

Governor

Himachal Pradesh

☎ 0177-2624152

2624440

🌐 governorsecy-hp@nic.in



संदेश

मुझे यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आयुर्वेद फाउंडेशन द्वारा पंचकुला, हरियाणा में 12 से 14 दिसंबर, 2025 तक राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव - "आयुर्वेद महोत्सव 2025" का आयोजन किया जा रहा है।

आयुर्वेद भारत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति ही नहीं, बल्कि यह हमारी जीवनशैली, चिंतन और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह केवल रोगों के उपचार की प्रणाली नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के समन्वय पर आधारित एक समग्र स्वास्थ्य दर्शन है। आज जब विश्व पुनः प्राकृतिक और पारंपरिक उपचार पद्धतियों की ओर लौट रहा है, ऐसे में आयुर्वेद की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है।

आयुर्वेद फाउंडेशन द्वारा देशभर के चिकित्सकों, औषधि निर्माताओं, शिक्षाविदों और विद्वानों को एक मंच पर लाकर ज्ञान-विनिमय और अनुसंधान की दिशा में यह प्रयास निश्चित ही सराहनीय है। यह आयोजन आयुर्वेद चिकित्सा के प्रचार-प्रसार, नवाचार एवं नयी पीढ़ी में इस पद्धति के प्रति विश्वास सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

महोत्सव की पूर्ण सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ।


(शिव प्रताप शुक्ल)

प्रति,

डॉ० ऋषभ दीक्षित

अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव

नई दिल्ली

Letter from Hon'ble Governor of Uttar Pradesh

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



राज भवन
लखनऊ - 226 027

14 अक्टूबर, 2025

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आयुर वैध फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा पंचकुला, हरियाणा में 12 से 14 दिसंबर, 2025 तक राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव—'आयुर महोत्सव-2025' का आयोजन किया जा रहा है।

भारत की प्राचीनतम चिकित्सा परंपरा आयुर्वेद केवल रोग उपचार की विधा नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन, संतुलित विचार और आध्यात्मिक समृद्धि का जीवनदर्शन है। यह हमारे सांस्कृतिक गौरव और वैज्ञानिक दृष्टि दोनों का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। महोत्सव के माध्यम से आयुर वैध फाउंडेशन द्वारा देशभर के विद्वानों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास सराहनीय है।

मुझे आशा है कि 'आयुर महोत्सव-2025' ज्ञान-संवाद, नवाचार और जनजागरण का ऐसा संगम बनेगा जो आने वाली पीढ़ियों को आयुर्वेद की समग्रता और वैज्ञानिकता से परिचित कराएगा।

मैं महोत्सव की सफलता की कामना करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

प्रति,
डॉ० ऋषभ दीक्षित
अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव
नई दिल्ली

Letter from Hon'ble Chief Minister of Uttarakhand

पुष्कर सिंह धामी



मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय

देहरादून - 248001

फोन : 0135-2650433

0135-2716262

फैक्स : 0135-2712827

कैम्प कार्यालय

फोन : 0135-2750033

0135-2750344

फैक्स : 0135-2752144

संदेश

मुझे यह जानकारी अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आयुर्वेद फाउन्डेशन द्वारा दिनांक 12, 13 एवं 14 दिसम्बर, 2025 को इन्दुधनुष ऑडिटोरियम, पंचकुला, हरियाणा में राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव 'आयुर्वेद महोत्सव-2025' का आयोजन किया जा रहा है। मुझे अवगत कराया गया है कि उक्त महोत्सव में देशभर से 5000 से अधिक चिकित्सकों, 100 से अधिक औषधि निर्माताओं, आयुर्वेद के विभिन्न क्षेत्रों में निपुण 40 विद्वान वक्ताओं, 30 विशिष्ट अतिथि, आयुष मंत्रालय के वरिष्ठ पदों पर आसीन माननीयों एवं विभिन्न राज्यों के आयुर्वेद विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं निदेशकों द्वारा भी प्रतिभाग किया जा रहा है। आयुर्वेद जो भारत की संस्कृतियों और परम्पराओं का अभिन्न हिस्सा रहा है, आज भी विश्वभर में स्वास्थ्य और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका निभा रहा है।

आयुर्वेद केवल एक चिकित्सा पद्धति नहीं है, बल्कि यह एक जीवन दर्शन है जो शरीर, मन और आत्मा के सन्तुलन का महत्व देता है। इसका उद्देश्य न केवल रोगों का उपचार करना है, बल्कि स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देकर रोगों से बचाव भी सुनिश्चित करना है। वर्तमान समय में जहाँ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान तेजी से विकसित हो रहा है, वहीं आयुर्वेद ने अपनी विशिष्टता और प्रासंगिकता को बनाये रखा है। आयुर्वेद के माध्यम से हम प्राकृतिक जड़ी-बूटियों, पौष्टिक आहार, योग और ध्यान जैसे तत्वों को अपनाकर एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सकते हैं। मुझे आशा है कि यह महोत्सव भी आयुर्वेद के वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसंधान और नवाचारों को साझा करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करने के साथ-साथ मानव जीवन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मेरी ओर से आयुर्वेद फाउन्डेशन के समस्त सम्मानित सदस्यों को उक्त महोत्सव के सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।


(पुष्कर सिंह धामी)

प्रति,

डॉ० ऋषभ दीक्षित

अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्वेद महोत्सव

नई दिल्ली



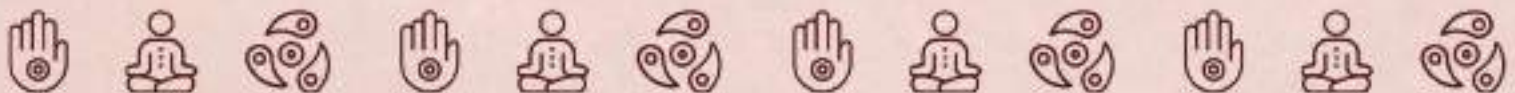
Message from the Chief Guest

Hon'ble Governor of Haryana Shri. Ahseem Kumar Ghosh

The National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025, held at Panchkula from 12th to 14th December 2025, was graciously inaugurated in the presence of the Hon'ble Governor of Haryana, who attended the festival as the Chief Guest and conveyed his appreciation for the vision and significance of this national initiative.

The Hon'ble Governor noted that Ayurveda, as one of India's most profound traditional knowledge systems, holds growing relevance in the contemporary global healthcare landscape. He observed that the principles of preventive care, holistic wellness, and integrative medicine central to Ayurveda are increasingly influencing global health strategies and policy frameworks. In this context, he emphasised the importance of positioning Ayurveda as a credible, evidence-based, and globally relevant system of medicine. Welcoming all participants to the land of Haryana, the Hon'ble Governor acknowledged the presence of exhibitors, institutions, startups, and industry leaders from across the country. He appreciated their contribution to the exhibition and recognised their role in advancing quality, innovation, and accessibility within the Ayurveda and traditional medicine ecosystem. Reflecting on the broader impact of the festival, the Hon'ble Governor expressed confidence that initiatives such as the National Ayurveda Festival would contribute significantly to enhancing India's leadership in the global traditional medicine and wellness domain. He noted that the collective deliberations and collaborations emerging from this platform would support international engagement, research advancement, and the responsible global integration of Ayurveda.

In his concluding observations, the Hon'ble Governor conveyed his appreciation to the organisers for successfully hosting a large-scale national event on the land of Haryana. He acknowledged the participation of over 4,000 Ayurvedic practitioners, scholars, and stakeholders, along with the active involvement of numerous Ayurvedic brands and institutions in the exhibition. He commended the organisers for their commitment, organisational excellence, and vision in creating a platform of this stature, contributing meaningfully to the national and global advancement of Ayurveda.





Guest of Honour

Prof. Dr. Mahesh Kumar Dadhich

CEO, National Medicinal Plants Board, Ministry of
AYUSH, Govt of India

During his interaction at the festival, Prof. Dadhich highlighted the strategic role of the National Medicinal Plants Board in strengthening the foundation of Ayurveda through focused policy support. He underscored the importance of conservation, cultivation, and sustainable utilisation of medicinal plant resources for the long-term growth of Ayurveda and traditional medicine systems.

He noted that initiatives undertaken by the Ministry of AYUSH through the National Medicinal Plants Board are designed to benefit farmers, cultivators, forest-dependent communities, researchers, entrepreneurs, and healthcare institutions. These efforts support livelihood generation and ensure the availability of quality raw materials for the expanding Ayurveda industry.

He expressed confidence that such collective efforts would contribute to the sustainable growth, global credibility, and institutional strengthening of Ayurveda, and extended his best wishes for the continued success of the festival.



Guest of Honour

Dr. Debasis Panda

Joint Advisor (Ayurveda), Ministry of AYUSH,
Govt. of India

The engagement of the Ministry of AYUSH at the festival reflected India's expanding role in shaping the global discourse on traditional medicine. It was noted that Ayurveda is increasingly recognised internationally as a preventive, integrative, and wellness-oriented healthcare system aligned with global priorities of sustainability, public health resilience, and holistic care.

The Ministry's policy-driven initiatives were highlighted as central to strengthening Ayurveda's global presence through international collaboration, research, quality and safety standards, regulatory alignment, and institutional capacity building. These efforts aim to position Ayurveda as a credible and scientifically grounded system while safeguarding its classical integrity.

The festival was noted as a significant step towards reinforcing India's leadership in traditional medicine and supporting Ayurveda's journey from a civilisational legacy to a globally respected healthcare system.



Guest of Honour

Mr. Tarun Bhandari

Political Secretary, Chief Minister Haryana

His presence at the festival reflected the clear and affirmative stance of the State leadership towards the promotion of Ayurveda and AYUSH-based healthcare systems in Haryana. It was articulated that Ayurveda aligns strongly with the State's vision of preventive healthcare, wellness-oriented living, and sustainable health practices, and continues to receive strategic encouragement as a system rooted in India's knowledge heritage.

The initiatives being fostered in Haryana for Ayurveda and allied traditional medicine systems were highlighted as part of a forward-looking approach that recognises the growing relevance of AYUSH in public health and community engagement.

The festival was noted as a constructive initiative that reflects the growing convergence between public interest, professional leadership, and policy encouragement for Ayurveda, reinforcing its role in public health discourse at both State and national levels.



Guest of Honour

Mr. Sanjay Tondon

Member of National Council, BJP & Co-Incharge,
Himachal Pradesh, BJP

Ayurveda was articulated as a system that reflects India's civilisational wisdom while addressing contemporary global healthcare priorities such as preventive care, wellness, and sustainability. It was observed that the growing international focus on traditional medicine presents a significant opportunity for India to lead responsibly, with Ayurveda playing a central role in this global transition.

The festival was appreciated as an initiative aligned with the broader vision of the Government of India to strengthen and globalise traditional knowledge systems and the relevance of Ayurveda within the evolving global framework. The organisation of the National Ayurveda Festival by the Ayur Vaidya Eduhealth Foundation was recognised as a meaningful step in translating national and global vision into community-driven engagement, bringing together practitioners, scholars, institutions, exhibitors, and the public.

The festival was recognised as a forward-looking initiative that reinforces Ayurveda's role in public welfare and its expanding presence in national and global health narratives.



Guest of Honour

Mr. Taranjeet Singh Bhamra

Chairman, Confederation of Indian Industry

The role of commerce and industry in strengthening Ayurveda's national and global footprint was highlighted, with emphasis on its growing acceptance within organised markets and global value chains. Ayurveda was viewed not only as a classical healthcare system, but also as an emerging sector with strong potential for innovation, entrepreneurship, and responsible commercial growth.

From the perspective of the Confederation of Indian Industry, the increasing participation of startups and organised enterprises in the Ayurveda ecosystem was acknowledged as a positive development. The integration of quality standards, research, regulatory compliance, and ethical business practices was recognised as key to building global trust and long-term sustainability.

The festival was noted as a significant step towards strengthening industry confidence in Ayurveda and reinforcing its position within India's evolving health and wellness economy.



Guest of Honour

Ms. Santosh Nautiyal

Chairperson, AYUSHEXCIL

The growing international demand for Ayurveda and AYUSH-based products was highlighted as a significant opportunity for India. In this context, the role of the AYUSH Export Promotion Council was underscored as a key mechanism established by the Ministry of AYUSH to strengthen the global export of Ayurveda and other AYUSH systems.

The structured efforts to promote Ayurveda exports through regulatory guidance, quality assurance, market access support, and international outreach were acknowledged as essential for building global trust. These initiatives were noted as directly benefiting manufacturers, exporters, startups, and established brands by enabling compliant and sustainable access to global markets.

The National Ayurveda Festival was appreciated as a timely platform aligned with this export vision. The participation of AYUSHEXCIL as an Associate Partner was recognised as a meaningful step in connecting policy support with industry readiness, reinforcing India's efforts to position Ayurveda as a globally competitive and trusted system.



Guest of Honour

Prof. Dr. Arun Kumar Tripathi

Vice Chancellor, Uttarakhand Ayurveda University

The festival was viewed as a meaningful convergence of Ayurveda academics and clinical practice, highlighting the importance of dialogue between universities, practitioners, and researchers. Ayurveda was articulated as a living medical science that must evolve through structured education while remaining anchored in its classical principles.

Emphasis was placed on the role of universities in nurturing competent practitioners and educators. The alignment of academic curriculum with clinical realities and contemporary health challenges was highlighted as essential for strengthening Ayurveda's credibility and relevance.

The National Ayurveda Festival was recognised as a valuable platform that brings scholars, clinicians, and students together, strengthening the academic foundations of Ayurveda and supporting its growth as a globally respected system of medicine.



Guest of Honour

Dr. Rampal Somani

Former Member, Ayurveda, Pharmacopoeia Committee,
Ministry of AYUSH, Govt. of India

The deliberations highlighted the critical role of pharmacopoeial standards, quality assurance, and scientific validation in strengthening the credibility of the Ayurveda pharmaceutical sector. The importance of standardised references, validated processes, and regulatory clarity was underscored as essential for national confidence and global acceptance.

From a manufacturing standpoint, emphasis was placed on the responsibility of the Ayurveda industry to uphold classical principles while adopting robust practices, quality control mechanisms, and compliance with pharmacopoeial guidelines. Such alignment was recognised as central to ensuring the safety, efficacy, and consistency of Ayurveda medicines.

The National Ayurveda Festival was appreciated as a platform connecting policy, science, manufacturing, and practice. The festival was recognised as a valuable initiative that strengthens trust, quality, and regulatory coherence, contributing to the future growth of the Ayurveda pharmaceutical sector.

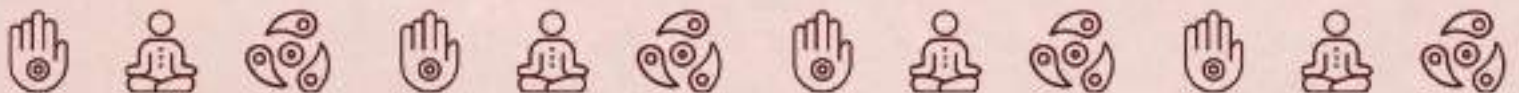
Institutional Vision Statement

Ayur Mahotsava 2025 - National Ayurveda Festival

National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025 is envisioned as a landmark national movement dedicated to positioning Ayurveda as a globally respected, academically robust, and socially transformative system of healthcare rooted in India's timeless wisdom and aligned with the evolving needs of global humanity.

Conceived and guided by **Ayur Vaidya Eduhealth Foundation**, the Festival stands as an institutional commitment to the advancement of Ayurveda through knowledge, integrity, collaboration, and leadership. It seeks to create a unified national platform that brings together academicians, practitioners, researchers, policymakers, industry leaders, entrepreneurs, and communities to collectively shape the future of Ayurveda. At its core, Ayur Mahotsava represents the convergence of classical wisdom and contemporary responsibility. The Festival upholds the sanctity of Ayurvedic principles while actively engaging with modern research, ethical innovation, quality frameworks, global dialogue, and institutional excellence. It aims to strengthen academic foundations, empower the Ayurveda fraternity, encourage responsible industry participation, and foster policy-aligned growth. Ayur Mahotsava 2025 aspires to contribute meaningfully to the global traditional medicine discourse by positioning Ayurveda as a preventive, holistic, and sustainable healthcare system capable of addressing modern public health challenges. The Festival envisions Ayurveda not merely as a legacy of the past, but as a leadership force in the future of global wellness. Guided by values of academic integrity, ethical practice, inclusivity, and service, Ayur Vaidya Eduhealth Foundation envisions this Festival as a catalyst for confidence within the Ayurveda fraternity and trust among society at large. It seeks to nurture institutions, inspire leadership, and build enduring bridges between tradition, science, governance, and community.

Through Ayur Mahotsava 2025, we reaffirm our resolve to elevate Ayurveda from a national heritage to a global health movement anchored in knowledge, strengthened by institutions, and driven by a collective commitment to the well-being of humanity. The Festival also emphasizes youth engagement, interdisciplinary collaboration, digital innovation, and international partnerships to ensure sustained relevance, accessibility, and measurable impact across diverse healthcare ecosystems worldwide.





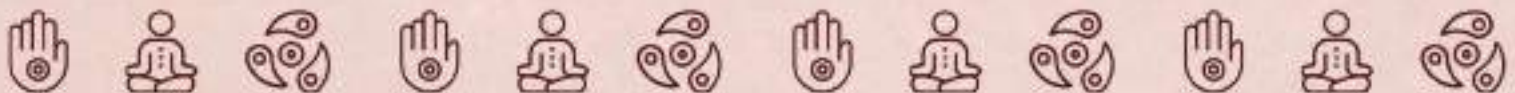
Organising Chairman

Dr. Rishabh Dixit

National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025, organised at Panchkula from 12th to 14th December 2025, represents a significant national initiative dedicated to the advancement of Ayurveda as a scientific, professional, and globally relevant system of healthcare. The successful organisation of this festival reflects a shared commitment towards strengthening the foundations of Ayurveda through dialogue, collaboration, and institutional engagement.

The festival has been conceptualised as a comprehensive platform bringing together practitioners, academicians, researchers, students, industry leaders, startups, policymakers, and institutions from across the country. Such convergence is essential for fostering mutual understanding, encouraging knowledge exchange, and supporting the collective growth of the Ayurveda fraternity. We extend a warm welcome to all delegates and participants who have joined the National Ayurveda Festival. Participation in scientific sessions, panel discussions, paper and poster presentations, exhibitions, and structured interactions offers meaningful opportunities for professional development, academic enrichment, and skill enhancement. These engagements are designed to add long-term value by strengthening clinical competence, research orientation, entrepreneurial capability, and leadership within the Ayurveda ecosystem. We sincerely acknowledge and appreciate the guidance and participation of dignitaries, speakers, mentors, exhibitors, startups, institutions, and partners whose contributions have been instrumental in shaping the festival. The active engagement of the Ayurveda fraternity and the wider public reinforces the relevance and importance of such initiatives in strengthening Ayurveda's contemporary and global outlook. National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava stands as a collective effort to promote excellence, collaboration, and professional maturity within Ayurveda. We are confident that the interactions, insights, and associations developed through this platform will continue to contribute positively to individual growth and to the broader advancement of Ayurveda.

With sincere gratitude to all participants and stakeholders, we look forward to building upon this shared vision for the continued progress and recognition of Ayurveda.





Our Patron

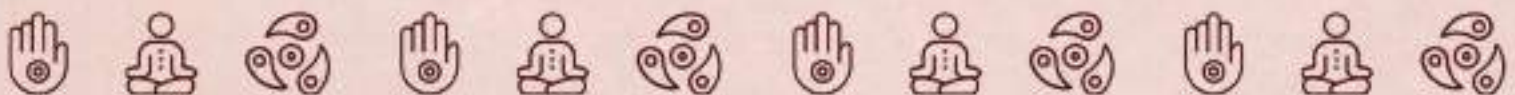
Dr. Rakesh Sharma

Former President of Board of Ethics and Registration for Indian System of Medicine, Ministry of Ayush, Govt. of India

The academic deliberations and perspectives shared during the festival reflected a deep and structured engagement with Ayurveda as a classical yet evolving medical science. Emphasis was placed on the need to strengthen academic rigor, ethical governance, and scholarly discipline as the foundation for Ayurveda's sustainable growth and global credibility. Ayurveda was articulated as a knowledge system that must be preserved in its classical essence while continuously engaging with contemporary scientific inquiry and global traditional medicine discourse.

A strong connect with the Ayurveda fraternity was evident through the emphasis on collective responsibility of educators, clinicians, researchers, institutions, and policymakers in shaping the future of Ayurveda. The importance of unity within the fraternity, guided by academic integrity and ethical clarity, was highlighted as essential for nurturing future generations of Ayurvedic professionals and for safeguarding the system's authenticity in an increasingly globalised healthcare environment. The National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava was recognised as a meaningful platform that enabled this convergence of thought, bringing together scholars, practitioners, institutions, and industry stakeholders for constructive dialogue and intellectual exchange. Such forums were acknowledged as vital for strengthening the professional ecosystem of Ayurveda and for fostering a shared vision within the fraternity. Appreciation was conveyed to the diverse delegations of academicians, practitioners, scholars, and institutional representatives who participated in the festival from across the country, contributing to its academic depth and national character. The role of exhibitors was also acknowledged for their valuable participation, reflecting innovation, quality, and commitment within the Ayurveda and traditional medicine ecosystem.

Gratitude was expressed to the organisers for conceptualising and executing a platform that upholds academic excellence, ethical reflection, and long-term vision. The festival was noted as a significant contribution towards strengthening the Ayurveda fraternity and advancing Ayurveda's role as a globally relevant system of medicine rooted in India's civilisational wisdom.





Our Mentor

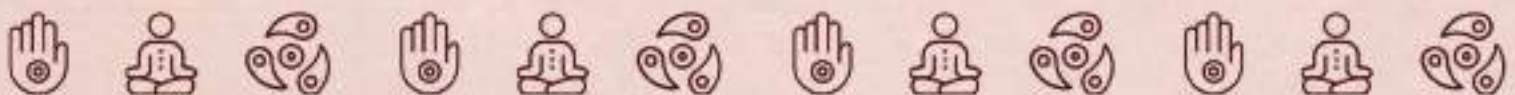
Prof. Dr. Hitesh Jani

Provost, Gau Vishwa Vidhyapeeth Ahmedabad.

The deliberations emphasised the central role of the Ayurveda fraternity particularly practitioners as custodians of a living medical tradition that continues to evolve across generations. Ayurveda practitioners were viewed not only as clinicians, but as carriers of classical knowledge, ethical responsibility, and experiential wisdom, whose collective conduct shapes the credibility and global perception of Ayurveda.

A strong connect was drawn between the professional unity of the Ayurveda fraternity and the expanding global presence of traditional medicine systems. It was observed that Ayurveda is increasingly being recognised worldwide for its holistic, preventive, and integrative approach to health, and that its future global growth will depend on the strength of its practitioners, academic grounding, and shared sense of purpose. The importance of internal coherence within the fraternity across practitioners, teachers, mentors, institutions, and professional platforms was highlighted as essential for sustaining Ayurveda's authenticity while engaging confidently with contemporary global health narratives. Such alignment was seen as critical for ensuring that Ayurveda's global expansion remains rooted in its classical foundations and ethical values.

The National Ayurveda Festival was appreciated as a platform that meaningfully nurtures this collective vision. By bringing together practitioners, scholars, mentors, and institutions from across the country, the festival was recognised as a space for intellectual exchange, professional reflection, and fraternity-wide dialogue. Such forums were acknowledged as vital for strengthening continuity, mentorship, and shared leadership within Ayurveda. Sincere appreciation was conveyed to the organisers for conceptualising and executing a well-structured national event dedicated to the advancement of Ayurveda. Gratitude was also expressed to all participants for their engagement and contribution, with the observation that initiatives of this nature play a pivotal role in elevating Ayurveda's journey. The festival was noted as a meaningful step towards empowering the Ayurveda fraternity and reinforcing Ayurveda's journey as a globally respected traditional medicine system, guided by collective responsibility, intellectual depth, and civilisational wisdom.



Section II

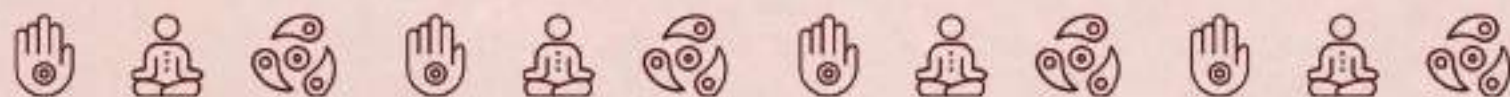
National Ayurveda Festival: Conceptual Framework

Genesis of the National Ayurveda Festival

The National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025 was conceived at a pivotal juncture in global healthcare, marked by an increasing international emphasis on preventive, holistic, and sustainable health systems. As traditional medicine gains growing recognition across global health frameworks, the responsibility to present Ayurveda with academic integrity, scientific clarity, and institutional confidence has become both timely and essential. In this evolving landscape, the Festival also seeks to strengthen public trust, promote interdisciplinary collaboration, and encourage evidence-based integration of Ayurveda within mainstream healthcare systems worldwide.

Ayur Mahotsava emerged from the vision to position Ayurveda not only as a civilisational heritage of India, but as a globally relevant system of medicine capable of addressing contemporary public health challenges. The Festival was designed as a structured national platform to unify the diverse stakeholders of the Ayurveda ecosystem—academia, practitioners, research institutions, policymakers, industry leaders, innovators, and the wider community under a shared commitment to excellence and collaboration. Rooted in classical Ayurvedic wisdom and oriented towards global engagement, the National Ayurveda Festival seeks to bridge tradition with modern research methodologies, regulatory frameworks, ethical governance, and responsible enterprise. It reflects the belief that Ayurveda's global advancement depends on strong academic foundations, credible evidence, quality-driven practices, and alignment with evolving international health discourse. Aligned with national healthcare priorities and the global momentum around traditional medicine, Ayur Mahotsava translates vision into action through academic deliberations, professional exchange, industry participation, and public engagement. The Festival creates a platform for leadership, dialogue, and shared responsibility, enabling Ayurveda to evolve with confidence while preserving its core principles.

Ayur Mahotsava 2025 stands as an institutional commitment to elevate Ayurveda from a revered legacy to a globally respected, evidence-informed, and people-centric system of medicine anchored in knowledge, guided by values, and dedicated to the well-being of humanity.



Core Objectives of Ayur Mahotsava 2025

National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025 was designed with clearly defined institutional objectives aimed at strengthening Ayurveda as a comprehensive healthcare system through capacity building, academic advancement, innovation, policy alignment, industry engagement, and public health outreach. Each objective reflects a deliberate effort to translate the Festival's Vision and Mission into structured action and measurable impact, while fostering interdisciplinary collaboration, enhancing global recognition, promoting evidence-based practices, and ensuring sustainable growth for future generations.

1. Strategic Purpose of Ayur Mahotsava

A primary objective of the Festival was to enhance the clinical competence, professional confidence, and contemporary readiness of Ayurvedic practitioners. Through specialised workshops, clinical seminars, expert-led lectures, and interactive learning sessions, the Festival aimed to support practitioners in refining diagnostic skills, therapeutic decision-making, and evidence-informed practice, while encouraging ethical standards, patient-centred care, and continuous professional development in evolving healthcare environments.

Institutional Intent:

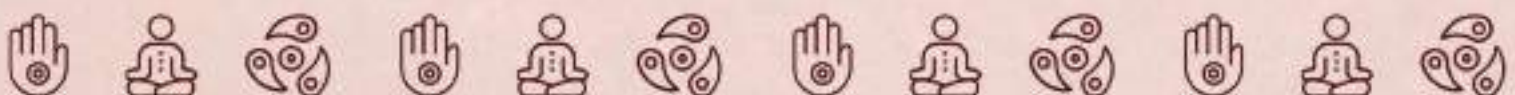
To empower practitioners as skilled, ethical, and globally relevant healthcare providers capable of delivering effective Ayurvedic care in diverse clinical and community settings.

2. Advancing Academic Excellence and Research Orientation

The Festival sought to reinforce the academic foundations of Ayurveda by promoting scholarly engagement, research dialogue, and documentation. Scientific paper presentations, poster sessions, and academic discussions provided a platform for teachers, researchers, scholars, and students to engage critically with classical texts and contemporary research methodologies.

Institutional Intent:

To cultivate a research-oriented academic culture that strengthens Ayurveda's scientific credibility, documentation, and global academic acceptance.



3. Promoting Innovation, Startups, and Entrepreneurial Leadership

Recognising innovation as a critical driver of Ayurveda's future, the Festival hosted dedicated Startup Conclaves, entrepreneurship discussions, and innovation forums. A flagship initiative under this objective was the Ayurveda Tank of India, where twenty startups from across the country presented scalable ideas, products, and service models before an expert audience.

Institutional Intent:

To nurture responsible entrepreneurship, encourage innovation aligned with Ayurvedic principles, and create pathways for startups to contribute meaningfully to healthcare delivery and economic growth.

4. Facilitating Policy Dialogue and Institutional Alignment

The Festival provided a structured space for dialogue on government policies, regulatory frameworks, and institutional perspectives related to Ayurveda and AYUSH systems. These discussions aimed to bridge gaps between policy vision and ground-level implementation by enabling interaction among policymakers, practitioners, academia, and industry stakeholders.

Institutional Intent:

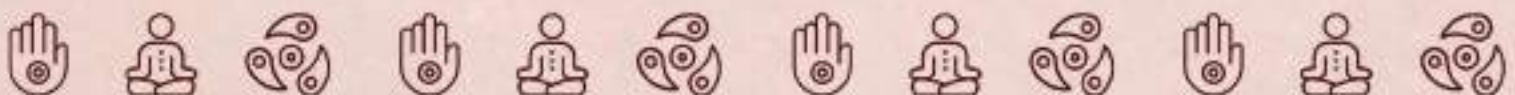
To promote cohesive development of Ayurveda through informed policy engagement, regulatory awareness, and institutional coordination.

5. Strengthening Industry Participation and Quality Ecosystems

The National Exhibition served as a key platform for Ayurvedic brands, manufacturers, institutions, and service providers to showcase innovation, quality practices, and responsible manufacturing. The exhibition encouraged interaction between industry, practitioners, academicians, startups, and policymakers, fostering strategic partnerships, facilitating technology transfer, promoting regulatory awareness, supporting market expansion, and strengthening trust in authentic, standardised, and globally competitive Ayurvedic products and services.

Institutional Intent:

To support quality-driven industry growth, promote standardisation and best practices, and strengthen Ayurveda's readiness for national and global markets.



6. Encouraging Knowledge Exchange and Interdisciplinary Dialogue

By bringing together diverse stakeholders—clinicians, scholars, mentors, entrepreneurs, regulators, and institutions—the Festival aimed to foster interdisciplinary dialogue and collaborative thinking across the Ayurveda ecosystem.

Institutional Intent:

To build a unified professional ecosystem where knowledge exchange and collective learning drive long-term institutional strength.

7. Expanding Public Health Outreach and Social Impact

In alignment with Ayurveda's preventive and community-centric philosophy, the Festival incorporated public health camps and wellness outreach initiatives. These efforts aimed to extend the benefits of Ayurveda beyond professional forums and directly engage the wider public.

Institutional Intent:

To reinforce Ayurveda's role in preventive healthcare, community wellness, and public health awareness.

8. Building Long-Term Institutional and Leadership Capacity

Beyond immediate engagements, Ayur Mahotsava 2025 was conceptualised as a leadership-building platform—nurturing future academicians, practitioners, entrepreneurs, and institutional leaders committed to Ayurveda's ethical and global advancement.

Institutional Intent:

To strengthen leadership, mentorship, and institutional continuity within the Ayurveda fraternity.

Concluding Perspective

The Core Objectives of Ayur Mahotsava 2025 collectively reflect an integrated institutional approach, where education, practice, research, innovation, policy, industry, and public engagement are treated as interconnected pillars. Through these objectives, the Festival translated its Vision into structured action and laid a foundation for sustained impact on Ayurveda's national and global journey.



Event Philosophy, Vision & Outcomes

Event Philosophy

Ayur Mahotsava 2025 is founded on the philosophy that Ayurveda is a complete science of life that must advance through knowledge, integrity, collaboration, and social responsibility. The Festival was designed as an institutional platform where classical Ayurvedic wisdom engages meaningfully with contemporary practice and global healthcare needs.

The philosophy recognises that the sustainable future of Ayurveda depends on the collective strengthening of practitioners, academics, industry, policy frameworks, and community trust. Education, clinical practice, innovation, governance, and public health outreach are viewed as interconnected pillars, reflecting Ayurveda's holistic worldview.

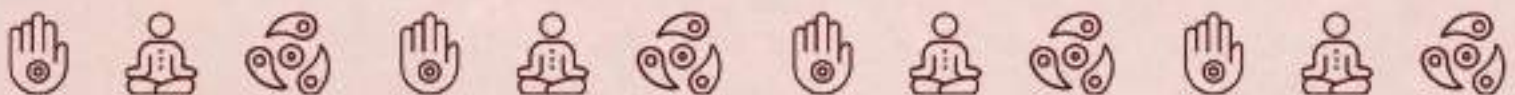
Beyond celebration, Ayur Mahotsava functions as a purpose-driven platform aimed at building professional competence, ethical practice, and long-term institutional confidence within the Ayurveda ecosystem, while fostering transparency, accountability, inclusive participation, evidence-based integration, continuous learning, and responsible leadership to ensure credibility, resilience, and relevance in evolving national and international healthcare landscapes.

Event Vision

The vision of Ayur Mahotsava 2025 is to position Ayurveda as a globally respected, scientifically credible, and socially relevant system of healthcare, rooted in India's civilisational wisdom and aligned with modern health priorities.

The Festival envisions a collaborative ecosystem where practitioners, scholars, entrepreneurs, policymakers, and communities work in synergy to advance preventive, holistic, and sustainable healthcare solutions.

It seeks to strengthen academic foundations, encourage responsible innovation, promote quality and standardisation, and support meaningful national and global engagement. Ayur Mahotsava aspires to serve as a catalyst for leadership, collaboration, and global confidence in Ayurveda, while nurturing future leaders, expanding research networks, integrating traditional knowledge with contemporary science, enhancing public awareness, and contributing to inclusive, accessible, and resilient healthcare systems worldwide.



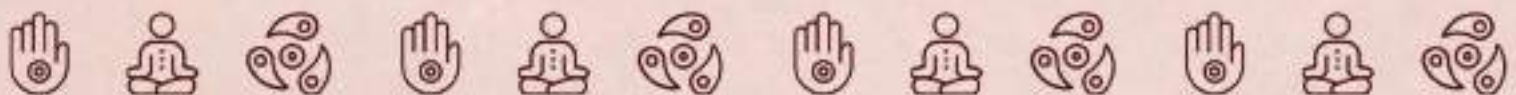
Outcomes & Impact

Ayur Mahotsava 2025 translated vision into action through tangible outcomes:

- **Strengthened practitioner capacity through workshops, seminars, and expert-led sessions**
- **Enhanced academic exchange and research orientation via paper presentations and scholarly dialogue**
- **Encouraged innovation and entrepreneurship through startup conclaves and Ayurveda Tank of India**
- **Enabled constructive policy and institutional dialogue across stakeholders**
- **Promoted quality-driven industry engagement through a national exhibition**
- **Extended Ayurveda's reach through public health camps and wellness outreach**
- **Reinforced Ayurveda's national and global positioning as a credible people-centric healthcare system**



AYUR VAIDYA
FOUNDATION



Festival Overview

Dates and Venue

Ayur Mahotsava 2025 – National Ayurveda Festival was convened from 12th to 14th December 2025 at Panchkula, Haryana, as a national congregation dedicated to the advancement of Ayurveda. The choice of Panchkula offered accessibility and a supportive environment for a multi-stakeholder forum. The three-day Festival was structured to enable academic deliberation, professional development, industry interaction, policy dialogue, and public engagement in a coordinated and outcome-oriented manner.

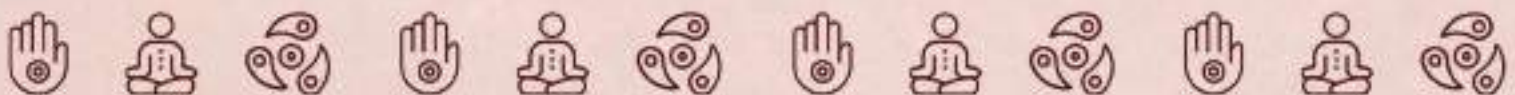
Participation Profile

Ayur Mahotsava 2025 witnessed extensive and diverse national participation, reflecting the breadth, depth, and maturity of the contemporary Ayurveda ecosystem. The Festival brought together stakeholders representing the full continuum of Ayurveda's academic, clinical, institutional, and entrepreneurial landscape.

Participants included:

- Ayurvedic practitioners and clinicians from diverse clinical backgrounds
- Academicians, researchers, scholars, and students from universities and teaching institutions
- Senior mentors, thought leaders, and subject experts
- Representatives from government bodies, advisory institutions, and allied organisations
- Industry leaders, manufacturers, exporters, startups, and entrepreneurs
- Professional associations, delegates, exhibitors, and members of the public

The presence of thousands of participants from across the country reinforced the Festival's character as a truly national platform—one that enabled cross-generational, cross-institutional, and cross-sector engagement within the Ayurveda fraternity.



Academic, Industry, and Policy Engagement

The intellectual architecture of Ayur Mahotsava 2025 was built on the principle that academics, industry, and policy must progress in alignment for Ayurveda to achieve sustainable national and global relevance. The Festival was therefore designed to integrate these three domains into a coherent and mutually reinforcing framework.

Academic Engagement focused on strengthening knowledge systems and scholarly exchange through:

- Scientific paper and poster presentations
- Academic lectures, panel discussions, and thematic seminars
- Practitioner-focused workshops and clinical learning sessions

Industry and Innovation Engagement addressed growth, quality, and entrepreneurship through:

- A national-level exhibition showcasing Ayurvedic brands, manufacturers, and institutions
- Startup conclaves and entrepreneurship discussions
- The Ayurveda Tank of India, featuring curated startup pitch presentations from across the country

Policy and Institutional Engagement provided space for informed dialogue on:

- Government initiatives, regulatory perspectives, and institutional frameworks
- Quality standards, research integration, and future pathways for Ayurveda and AYUSH systems
- Interaction among policymakers, practitioners, academicians, and industry stakeholders
- This integrated engagement enabled meaningful exchange between theory and practice, policy intent and ground realities, and innovation and tradition.



Section III

Inaugural Proceedings and
Ceremonial Highlights

Inaugural Ceremony

Proceedings, Protocol & Traditional Invocation

The Inaugural Ceremony of Ayur Mahotsava 2025 – National Ayurveda Festival marked the formal and ceremonial commencement of the national event and established the official, cultural, and institutional framework for the three-day proceedings. The ceremony was conducted with due observance of protocol and tradition, reflecting the dignity, discipline, and values intrinsic to Ayurveda as a system of life and healthcare.

The inaugural proceedings symbolised the convergence of India's civilisational heritage, constitutional leadership, academic excellence, and contemporary vision for the advancement of Ayurveda. The presence of eminent dignitaries from governance, policy institutions, academia, industry, and the Ayurveda fraternity underscored the national importance and institutional stature of the Festival.

The ceremony was graced by the Chief Guest, Hon'ble Governor of Haryana, Prof. Ashim Kumar Ghosh, along with distinguished Patrons and Guests of Honour, marking the collective endorsement of the Festival's vision and objectives.

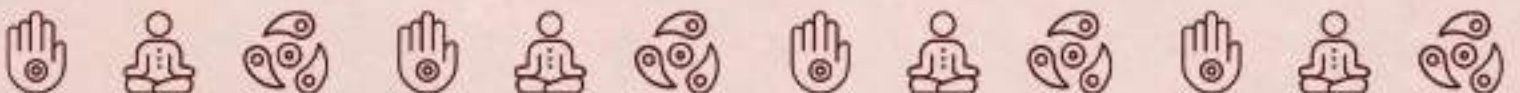
Traditional Invocation

In accordance with Indian cultural and ceremonial tradition, the Inaugural Ceremony commenced with a formal Sanskrit invocation, invoking auspiciousness, harmony, and collective well-being. The sacred shloka recited on the occasion was:

“शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा।”

May auspiciousness prevail, may welfare be ensured, and may health and prosperity be bestowed upon all.

The invocation reflected the foundational philosophy of Ayurveda, which places arogya (health), balance, and holistic well-being at the centre of human life. The recitation of the shloka set a solemn and reflective tone, reaffirming that Ayurveda is a science dedicated not only to treatment, but to the comprehensive welfare of society.



Ceremonial Lamp Lighting

The Ceremonial Lamp Lighting constituted the central symbolic act of the Inaugural Ceremony. The lighting of the lamp represented the illumination of knowledge (jnāna), the dispelling of ignorance, and the collective commitment to ethical practice, wisdom, and service.

The lamp lighting was conducted strictly in accordance with established ceremonial protocol:

- The inaugural lamp was first lit by the **Chief Guest, Hon'ble Governor of Haryana, Prof. Ashim Kumar Ghosh**, signifying constitutional dignity and formal inauguration of the Festival.
- This was followed by the lighting of the lamp by the **Patrons of the Foundation**, namely **Prof. Dr. Rakesh Kumar Sharma**, Former President, Board of Ethics Committee, National Commission for Indian System of Medicine, and **Dr. Hitesh Jani**, Provost, Gau Vishwa Vidhyapeeth Ahmedabad.
- Thereafter, the lamp lighting was joined by the **Guests of Honour**, symbolising collective leadership and shared responsibility across institutions and sectors.

The Guests of Honour present on the dais included:

- **Prof. Mahesh Kumar Dadhich**, CEO, National Medicinal Plants Board, Ministry of AYUSH, Government of India
- **Mr. Tarun Bhandari**, Political Secretary to the Hon'ble Chief Minister of Haryana
- **Mr. Taranjeet Singh Bhamra**, President, Confederation of Indian Industry, Chandigarh Chapter
- **Ms. Santosh Nautiyal**, Chairperson, AYUSH Export Promotion Council
- **Mr. Sanjay Tandon**, Senior National Leader of Bhartiya Janta Party
- **Dr. Sanchit Sharma**, Managing Director, AIMIL Pharmaceuticals & Founder, Ayouthveda

The collective participation in the ceremonial act reflected institutional unity and a shared commitment to the advancement of Ayurveda through policy support, academic rigor, ethical governance, industry participation, innovation, and public engagement.



Section IV

**National Ayurveda Festival
Proceedings**

National Ayurveda Festival

Conference Overview and Scientific Framework

The The National Ayurveda Festival - Ayur Mahotsava 2025, organised by Ayur Vaidya Foundation, constituted the academic axis of the three-day gathering.

Designed as a structured platform for scholarly engagement, the conference sought to:

- Facilitate evidence-informed discourse in Ayurveda
- Encourage interdisciplinary and translational research
- Strengthen methodological standards
- Promote dialogue between classical foundations and contemporary scientific frameworks
- Contribute to national and global conversations on traditional medicine

The scientific framework of the conference was anchored in:

- Classical Ayurvedic epistemology
- Clinical documentation and therapeutic rationality
- Emerging biomedical correlations
- Policy-aligned research directions
- Ethical and methodological rigor integration

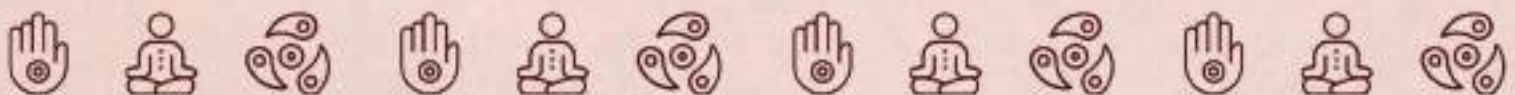
The conference reflected a deliberate effort to position Ayurveda not merely as a traditional knowledge system, but as a dynamic, research-responsive discipline.

Structured Scientific Address Series (Day-wise Proceedings)

tThe Scientific Conference of AyurMahotsava 2025 featured a comprehensive series of structured speaker sessions conducted over three days, bringing together clinicians, academicians, policymakers, pharmaceutical leaders, hospital administrators, entrepreneurs, and research scholars.

Across 28 speaker sessions, the deliberations addressed:

- Clinical reasoning and protocol-based practice
- Pharmaceutical validation and standardisation
- Regulatory and governance frameworks
- Hospital development and accreditation models
- Research methodology and translational science



- Entrepreneurship and startup mentorship
- Ethical communication and public engagement
- Professional diversification for Ayurveda graduates integration

DAY ONE - 12 December 2025

Clinical Foundations, Industry Leadership & Scientific Validation

Session 1



Dr. Tanmay Goswani

MD (Ayu.), Vice President – Sanskriti University

Topic: Clinical Approach through Ayurveda

Dr. Goswani delivered a structured discourse on strengthening clinical reasoning through classical Ayurvedic diagnostic frameworks. Emphasising Dosha–Dushya–Agni–Srotas assessment, he highlighted the importance of systematic patient evaluation and therapeutic sequencing.

Key Takeaways & Remarks:

- Clinical excellence depends on disciplined application of diagnostic logic.
- Emphasis on measurable outcomes in clinical practice.

Session 2



Ms. Santosh Nautiyal

Executive Director – AYUSHEXCIL

Topic: Strengthening Global Trade and Export Ecosystems in Ayurveda

Dr. Goswani delivered a structured discourse on strengthening clinical reasoning through classical Ayurvedic diagnostic frameworks. Emphasising Dosha–Dushya–Agni–Srotas assessment, he highlighted the importance of systematic patient evaluation and therapeutic sequencing.

Key Takeaways & Remarks:

- Export readiness depends on quality benchmarking and regulatory alignment.
- Institutional coordination strengthens Ayurveda's trade presence.





Special Guest

Shri. Acharya Manish Ji

Founder, Jeena Sikho Lifecare

Acharya Manish Ji is a distinguished name in the field of Ayurveda and integrative healthcare, known for his commitment to restoring the relevance of classical healing sciences in the modern era. With a vision centered on building a prevention driven, patient centric healthcare ecosystem, his work reflects a seamless blend of traditional Ayurvedic principles and contemporary clinical understanding.

As the Founder of Jeena Sikho Lifecare Limited and HIIMS (Hospital & Institute of Integrated Medical Sciences), he has led the development of a growing network of integrative healthcare institutions across India. Through a multidisciplinary approach combining Ayurveda, Panchakarma, Naturopathy, Yoga, and modern diagnostics, his institutions focus on addressing the root cause of diseases while promoting long term health sustainability.

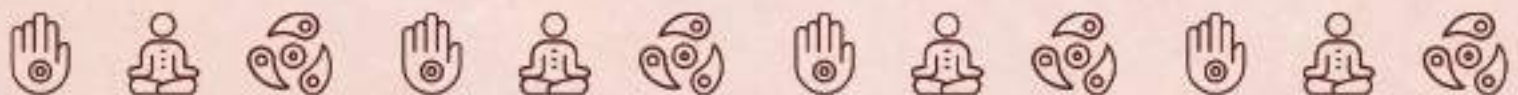
Ayur Mahotsava 2025 | Day 2 Address (13th December 2025)

At Ayur Mahotsav 2025, Acharya Manish Ji delivered an insight-driven session highlighting Ayurveda's evolving role in addressing modern health challenges. He emphasized integrative approaches to kidney health through structured Ayurvedic therapies, disciplined nutrition, and regulated lifestyle practices, noting their positive impact on patient well-being.

A key focus was the foundational role of lifestyle in both disease and healing. Drawing from classical principles of Aahar (diet) and Vihar (lifestyle), along with Pathya Apathya, he reinforced that sustainable health depends on aligning daily habits with natural rhythms and individual constitution.

He also shared clinical perspectives from HIIMS on managing chronic and critical conditions, including cancer, through detoxification, nutrition, and holistic care alongside medical guidance aimed at improving quality of life.

Concluding his address, he stressed the need to shift towards preventive and promotive healthcare, where early intervention, awareness, and disciplined living can significantly reduce the burden of chronic diseases.



Session 3



Dr. Ruchi Srivastava

GM – Medical & Regulatory Affairs, Multani Pharmaceuticals Ltd.,
New Delhi

Topic: Emerging Horizons in Ayurvedic Research & Regulatory Frameworks

Dr. Srivastava examined regulatory alignment and research evolution within Ayurvedic pharmaceuticals. She discussed integration of scientific tools such as genomics and AI, alongside standardisation and pharmacovigilance practices. The lecture emphasised regulatory preparedness, quality governance, and structured validation as prerequisites for global market positioning.

Key Takeaways & Remarks:

- Regulatory compliance enhances international credibility.
- Highlighted the importance of pharmacovigilance systems.

Session 4



Mr. Vikram Baidyanath

Group President, Baidyanath Group

Topic: Institutional Legacy & Organised Pharmaceutical Growth

Shri Baidyanath reflected on the evolution of heritage-based pharmaceutical institutions into organised manufacturing ecosystems. He discussed infrastructure expansion, quality governance, and balancing classical authenticity with regulatory demands. The address underscored institutional continuity as foundational to sustainable industrial growth. He further highlighted innovation-driven practices, skilled workforce development, strategic collaborations, and responsible modernization to ensure long-term global competitiveness.

Key Takeaways & Remarks:

- Legacy institutions shape industry standards.
- Highlighted manufacturing accountability frameworks.



Session 5



Dr. E. T. Krishnan Mooss

Executive Director, Vaidyaratnam Oushadhasala

Topic: Institutional Continuity & Responsible Entrepreneurship

Dr. Mooss further elaborated on the importance of structured mentorship frameworks to nurture the next generation of Ayurvedic leaders within traditional institutions. He highlighted the need for clear governance policies, accountability mechanisms, and strategic vision planning to ensure institutional continuity. The session also emphasized responsible integration of modern business models while safeguarding classical doctrines and therapeutic integrity. Dr. Mooss concluded by stressing that sustainable growth must be rooted in ethical leadership, cultural preservation, and evidence-informed innovation.

Key Takeaways & Remarks:

- Ethical entrepreneurship preserves institutional credibility.
- Emphasised continuity of lineage knowledge.

Session 6



Dr. Hitesh Jani

Provost, Gau Vishva Vidyapeeth, Gandhinagar

Topic: Academic Leadership & Value-Based Healthcare

Dr. Jani also highlighted the importance of interdisciplinary collaboration and evidence-based research to strengthen the global credibility of Ayurveda. Emphasis was placed on integrating traditional wisdom with modern scientific validation to enhance academic excellence. The discussion further encouraged institutions to build strong research ecosystems, promote innovation in Panchakarma practices, and cultivate ethical leadership among students.

Key Takeaways & Remarks:

- Academic governance shapes professional standards.
- Advocated structured higher education reform.



Session 7



Mr. Ajit Pal Singh

Vice President & Business Head – Zandu, Emami Ltd.

Topic: Modernizing Ayurveda – A Scientific & Scalable Future

Mr. Singh presented a strategic roadmap for global scalability of Ayurveda. The session addressed clinical validation, brand trust, consumer awareness, and innovation-driven product development aligned with regulatory expectations. He emphasized the importance of evidence-based research, international collaborations, and standardization to strengthen Ayurveda's credibility in global markets. The discussion also highlighted the role of digital marketing, sustainable sourcing, and transparent labeling in building long-term consumer confidence worldwide.

Key Takeaways & Remarks:

- Scientific validation supports global competitiveness.
- Reinforced disciplined market positioning.

Session 8



Dr. Himanshu Tiwari

MD (Ayu.), MBA, President – Technical, KRM Ayurveda Ltd.

Topic: Scientific Validation of Ayurvedic Pharmaceuticals

Dr. Tiwari discussed pharmaceutical standardisation, pharmacovigilance, and evidence-based documentation. The lecture focused on bridging classical formulations with modern validation protocols to meet global regulatory standards. He also emphasized the importance of quality control, safety monitoring, and scientific transparency to enhance global acceptance of traditional medicines.

Key Takeaways & Remarks:

- Quality control is foundational to safety and efficacy.
- Emphasised global benchmarking.



Session 9



Dr. Rajeev Kumar Kurele

Associate Professor, Uttarakhand Ayurved University

Topic: Opportunities in Herbal Pharma

Dr. Kurele examined herbal pharmaceutical expansion through research-backed development, standardisation, MAP conservation, and export readiness. The session positioned regulatory preparedness and documentation as drivers of sustainable growth. The discourse further emphasised evidence-based validation and quality assurance as essential pillars for strengthening global competitiveness and long-term sectoral resilience.

Key Takeaways & Remarks:

- One Drug – One Quality” ensures credibility.
- Emphasised institutional coordination.

DAY TWO - 13 December 2025

Advanced Clinical Themes, Innovation & Policy Dialogue

Session 10



Dr. Shivam Maheshwari

Baidyanath Research Foundation

Topic: Dyslipidemia – An Ayurvedic Perspective

Dr. Maheshwari addressed dyslipidemia within the framework of contemporary lifestyle disorders and correlated biomedical lipid abnormalities with Ayurvedic concepts such as Medo Dhatu Dushti and impaired Agni. The session highlighted preventive and therapeutic strategies rooted in Ahara and Vihara regulation, alongside rational use of classical formulations.

Key Takeaways & Remarks:

- Lifestyle correction remains central to metabolic disorder management in Ayurveda.
- Advocated structured documentation in chronic disease management.



Session 11



Vd. Vinay Velankar

Rashtriya Ayurveda Guru, Founder – Ayurveda Vyaspeeth

Topic: Kasta Sādhyā Vyādhi Chikitsa – Practical Clinical Demonstration

Vd. Velankar conducted a case-based demonstration focusing on complex and chronic wound management. Through documented cases such as diabetic foot gangrene and non-healing ulcers, he illustrated classical assessment principles and therapeutic sequencing. The session emphasised integrating local and systemic interventions while maintaining disciplined follow-up protocols. The presentation reinforced evidence-informed clinical reasoning and highlighted the importance of individualized treatment planning within traditional frameworks.

Key Takeaways & Remarks:

- Chronic wound management requires systematic therapeutic sequencing.
- Reinforced clinical discipline in complex case management.

Session 12



Dr. Sanchit Sharma

PhD (Pharmacognosy & Phytochemistry), Founder – Ayouthveda, Executive Director – AIMIL Pharmaceuticals

Topic: Ayurveda 2030 – Bridging Phytochemistry, Clinical Evidence & Modern Healthcare

Dr. Sharma presented a forward-looking framework for Ayurveda's integration into future healthcare systems. He discussed mapping classical constructs such as Rasa, Guna, Virya, and Vipaka with phytochemical and bioactive markers. The session emphasised translational research and bridging terminological gaps between Ayurveda and biomedical science.

Key Takeaways & Remarks:

- Translational research strengthens interdisciplinary dialogue.
- Encouraged global scientific communication strategies.



Session 13



Vd. Sanghmitra Dash

Founder & CEO – Ayursure Ayurveda Academy & Shree Anandam Ayurveda

Topic: Daiva Vyapashraya Chikitsa & Reproductive Health Dialogue

Vd. Dash revisited classical therapeutic classifications — Daivavyapashraya, Yuktivyapashraya, and Sattvavajaya — within contemporary clinical contexts. The session explored philosophical dimensions of causation and mind-body interrelationships in healing. A structured dialogue on reproductive health followed, focusing on lifestyle alignment, individualised therapeutic planning, and the importance of systematic clinical documentation in women's health management.

Key Takeaways & Remarks:

- Holistic healing frameworks require ethical and disciplined practice.
- Advocated patient-centric and evidence-informed approaches.

Session 14



Mr. Madhusudhan Chauhan

CEO & Director – Jiva Ayurveda

Topic: Scaling Organised Ayurveda & Ayurveda Tank of India

Mr. Chauhan addressed the transformation of traditional practice into organised clinical networks supported by digital platforms and tele-consultation systems. The session highlighted scalability through standardised treatment protocols, transparent documentation, and structured entrepreneurship. The concept of Ayurveda Tank of India was positioned as a mentorship-driven platform to guide startups toward innovation aligned with regulatory and classical frameworks.

Key Takeaways & Remarks:

- Organised healthcare models enhance accessibility and scalability.
- Reinforced institutional transparency and accountability.



Session 15



Mr. Ramanathan Sridhar

CEO – SNA Oushadhasala

Topic: Institutional Governance, Global Markets & Ayurveda Tank of India

Mr. Sridhar highlighted the balance between heritage-based pharmaceutical traditions and global expansion. The address focused on export readiness, regulatory compliance, quality benchmarking, and manufacturing governance. He emphasised that legacy institutions must guide emerging enterprises through structured mentorship to ensure global competitiveness without compromising classical integrity. The session further underscored strategic capacity building and institutional responsibility as essential pillars for sustainable international growth.

Key Takeaways & Remarks:

- Global expansion requires rigorous regulatory preparedness.
- Advocated responsible commercialisation models.

Session 16



Vd. Debashish Panda

Joint Advisor (Ayurveda), Ministry of AYUSH, Government of India

Topic: Policy Frameworks & Strategic Governance for Strengthening Ayurveda

Vd. Pandey outlined the governance architecture shaping Ayurveda's integration into national healthcare systems. The session addressed regulatory strengthening in education and pharmaceuticals, institutional accreditation mechanisms, capacity building, digital documentation, and export facilitation. Emphasis was placed on balancing classical authenticity with administrative accountability to ensure coherent and sustainable growth.

Key Takeaways & Remarks:

- Policy coherence ensures structured institutional development.
- Reinforced integration within national health missions.



DAY THREE - 14 December 2025

Strategic Integration, Research Advancement & Global Outlook

Session 17



Dr. Rampal Somani

Former Member – Ministry of AYUSH

Former Assistant Drug Controller (Ayurveda), Rajasthan

Topic: Regulatory Strengthening and Quality Governance in Ayurveda

Dr. Rampal Somani presented a policy-oriented address emphasising the importance of regulatory oversight in maintaining quality and safety within Ayurveda. He highlighted Good Manufacturing Practices (GMP), licensing discipline, and pharmacovigilance as essential components of governance.

Key Takeaways & Remarks:

- Regulatory compliance and quality assurance safeguard credibility and public confidence.

Structured governance frameworks are vital for Ayurveda's sustained

Session 18



Dr. P. N. Joardar

Additional Chief Manager – Marketing, Arya Vaidya Sala, Kottakkal

Topic: Strategies for Startups – Balancing Profit & Purpose

Dr. Joardar addressed entrepreneurship within Ayurveda, focusing on balancing commercial sustainability with classical integrity. The session explored ethical branding, long-term trust building, risk assessment, and structured market positioning. Emphasis was placed on revenue models rooted in responsible practice and value-driven communication. The address highlighted that profitability must coexist with institutional credibility.

Key Takeaways & Remarks:

- Ethical governance sustains entrepreneurial growth.
- Advocated strategic and disciplined expansion.



Session 19



Dr. Rahul Parihar

Founder – Pratyaksh Ayurveda Coaching Institute

Topic: Professional Development & Academic Preparedness

Dr. Parihar focused on strengthening academic and professional competencies among Ayurveda graduates. The session highlighted structured mentorship, competitive examination preparedness, and clinical reasoning enhancement. He discussed diversified career pathways and the importance of continuous skill development to meet evolving healthcare demands. The address positioned capacity building as essential to sustaining professional standards within Ayurveda.

Key Takeaways & Remarks:

- Structured mentorship enhances academic excellence.
- Reinforced continuous learning frameworks.

Session 20



Mr. Agnim Gupta

Technology & Growth Strategist – Amrutam

Topic: Technology-Enabled Growth in Ayurveda Enterprises

Mr. Gupta examined the role of digital infrastructure and scalable growth strategies within Ayurveda startups. The session explored product scalability, data-driven decision-making, compliance in digital expansion, and responsible innovation. Emphasis was placed on integrating technology without compromising regulatory norms or classical authenticity. He further highlighted the importance of building adaptive digital ecosystems that support transparency, traceability, and long-term sustainable growth.

Key Takeaways & Remarks:

- Digital systems enhance operational scalability.
- Advocated ethical digital communication.



Session 21



Dr. Aditya Mishra

Senior Manager – Medico Marketing, Emami Ltd.

Topic: Scope of BAMS in Pharmaceutical & Allied Sectors

Dr. Mishra discussed expanding professional opportunities for BAMS graduates beyond traditional clinical practice. The session covered roles in regulatory affairs, pharmaceutical development, medico-marketing, documentation, and interdisciplinary education. Emphasis was placed on professional resilience, communication skills, and structured career planning within organised healthcare industries. He also encouraged continuous skill enhancement and industry exposure to align academic knowledge with evolving healthcare demands.

Key Takeaways & Remarks:

- Diversified career pathways enhance professional stability.
- Reinforced industry-academia collaboration.

Session 22



Dr. Hariprasad Shetty M

Founder & Medical Director – Ayurdhama Ayurveda, Karnataka

Topic: Developing Ayurveda Hospitals for Global Patients

Dr. Shetty presented strategic models for positioning Ayurveda hospitals for international outreach. The session highlighted infrastructure alignment with global expectations and accreditation preparedness. Emphasis was placed on quality consistency to ensure sustainable global expansion.

Key Takeaways & Remarks:

- Global outreach requires standardisation and accreditation.
- Institutional discipline ensures international trust.

Remarks:

- Reinforced documentation integrity.
- Advocated structured international positioning.



Session 23



Dr. Vikas Gupta

BAMS, PGDIP, CKSV, MBA (HCS); Founder – Sandhya Medicity

Topic: The Future of Ayurveda – Trends in Hospital Development & Clinical Integration

Dr. Gupta presented a structured roadmap for institutionalising Ayurveda within organised hospital infrastructure. The session examined regulatory compliance, NABH preparedness, interdisciplinary integration, and operational governance in Ayurveda hospitals. The address highlighted that sustainable hospital development requires balancing clinical authenticity with administrative efficiency and quality benchmarks.

Key Takeaways & Remarks:

- Institutional governance strengthens hospital-based Ayurveda.
- Advocated accreditation and compliance readiness.

The sessions were organised in a progressive framework:

- **Day One** emphasised clinical foundations, pharmaceutical governance, academic leadership, and industrial scalability.
- **Day Two** focused on advanced thematic discussions including metabolic disorders, translational research, reproductive health, organised healthcare systems, and national policy frameworks.
- **Day Three** consolidated strategic integration, research validation, hospital development, technology-enabled growth, and global outreach models.

Each speaker session maintained academic neutrality, methodological clarity, and structured discourse. The emphasis remained on strengthening Ayurveda through disciplined documentation, regulatory alignment, and evidence-informed articulation without compromising classical epistemology.

Thematic Panels, Clinical Demonstrations & Policy Dialogues

In addition to individual addresses, the conference incorporated structured thematic panels and expert deliberations to facilitate deeper analytical



engagement. These sessions enabled interdisciplinary dialogue, encouraging participants to critically examine emerging challenges and collaborative solutions within the field. The format promoted evidence-based discussions, policy-oriented thinking, and the exchange of practical insights grounded in both academic research and applied experience.

These included:

- **Panel on Female Reproductive Health**

Addressing structured documentation, lifestyle correction, Panchakarma support, and collaborative research in reproductive management.

- **Panel on Scientific Validation of Ayurvedic Pharmaceuticals**

Focusing on standardisation, pharmacovigilance, translational research models, and industry-academia collaboration.

- **Panel on Research, Clinical Trials & Holistic Methodology**

Examining multicentric studies, methodological clarity, ethical trial design, and integration of holistic assessment tools.

- **Policy Dialogue Session**

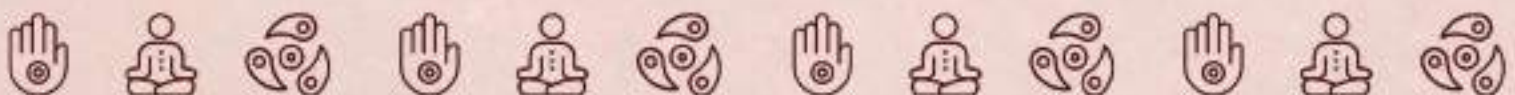
Led by senior governance representatives, highlighting regulatory strengthening, accreditation systems, digital documentation, and integration within national health missions.

- **Clinical Demonstration Session**

Featuring case-based applications in complex and chronic disease management, reinforcing experiential learning supported by documentation integrity.

These deliberative formats encouraged cross-sectoral interaction among practitioners, researchers, policymakers, and industry leaders. The discussions were conducted in a structured and academically responsible manner, prioritising methodological rigor, ethical accountability, and translational applicability. The thematic engagements enhanced the depth of the conference beyond individual lectures and contributed to collective knowledge consolidation.

Furthermore, the interactive exchanges fostered critical reflection and collaborative problem-solving, enabling participants to integrate diverse perspectives into coherent frameworks for action.



Section V

Scientific Research Presentations

Scientific Research Presentations

Oral Scientific Paper Presentations

Clinical, Experimental, and Literary Research

The Oral Scientific Paper Presentation Sessions constituted a principal academic pillar of AyurMahotsava 2025 – National Ayurveda Festival, organised by Ayur Vaidya Foundation. These sessions were designed to foster structured scientific dialogue, encourage critical evaluation, and promote evidence-informed discourse within the Ayurveda fraternity.

A total of 298 abstracts were received in response to the call for scientific submissions, reflecting strong national participation from clinicians, postgraduate scholars, academicians, and institutional researchers. Following a rigorous peer-review process, 118 abstracts were selected for Oral Presentation.

The Scientific Review Committee comprised:

- Dr. Mrunal Arke
- Dr. Dhaval Dholakiya
- Dr. Divy Bhalodi
- Dr. Mital Mehul Joshi
- Dr. Anupam Jangra

Each submission underwent evaluation on clearly defined academic criteria:

- Conceptual grounding in classical Ayurvedic principles
- Methodological integrity and research design
- Clinical applicability and translational relevance
- Originality and contribution to knowledge
- Ethical and documentation standards

The Oral Sessions covered diverse domains, including:

- Case-based therapeutic documentation
- Panchakarma interventions in metabolic disorders
- Management of lifestyle-induced and non-communicable diseases
- Classical textual reinterpretations
- Integrative clinical models



The discussions that followed each presentation facilitated constructive academic exchange, critical questioning, and refinement of research approaches. The sessions reflected a maturing research ecosystem that increasingly emphasises structured documentation, rational application, and outcome-oriented evaluation.

Poster Presentation Sessions

The Poster Presentation Sessions provided an academically inclusive platform, particularly encouraging participation from postgraduate and undergraduate scholars. From the total submissions received, 78 abstracts were selected for poster display and discussion.

The poster segment demonstrated innovation across emerging fields, including:

- Ayurgenomics and personalised medicine
- Development of diagnostic tools grounded in Ayurvedic epistemology
- Conceptual reinterpretation of contemporary therapeutic procedures
- Women's health and endocrine disorders
- Preventive and lifestyle-based interventions

Interactive poster discussions enabled deeper engagement between presenters, jury members, and delegates. These exchanges encouraged young researchers to adopt structured research methodologies, improve documentation standards, and strengthen hypothesis formulation.

The poster sessions particularly highlighted the increasing inclination toward validation studies, pilot instruments, and interdisciplinary collaboration, indicating a progressive shift toward research robustness within Ayurveda academia.

Research Methodologies and Emerging Scientific Insights

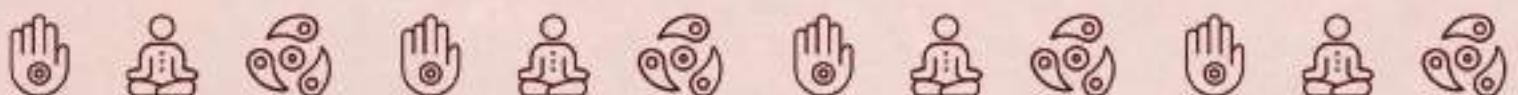
A consolidated analysis of both Oral and Poster sessions revealed important methodological and thematic trends within contemporary Ayurvedic research:

1. Strengthening of Case-Based Evidence

There was a notable emphasis on systematic clinical documentation, especially in chronic and lifestyle disorders such as diabetes, obesity, and respiratory conditions.

2. Integration with Biomedical Parameters

Several studies demonstrated efforts to correlate Ayurvedic diagnosis and treatment outcomes with measurable biomedical indicators, supporting interdisciplinary acceptance.



3. Development of Structured Diagnostic Tools

Emerging research included pilot validation of questionnaires and assessment tools rooted in classical Ayurvedic constructs such as Dosha and Vata subtypes.

4. Expansion into Genomics and Personalised Medicine

The inclusion of Ayurgenomics-based studies indicates increasing interest in aligning Prakriti-based assessment with genomic markers, signalling future research directions.

5. Emphasis on Methodological Clarity

There was visible awareness regarding research design, sampling, outcome measurement, and ethical reporting, reflecting alignment with national academic standards.

Collectively, these trends underscore Ayurveda's evolving research identity — one that seeks to preserve classical epistemology while engaging with contemporary scientific frameworks.

Best Scientific Paper and Poster Awards

Based on consolidated jury assessment, six presenters were identified for exceptional scientific merit, presentation clarity, and research relevance.

Recognised Oral Paper Presentations

- **Dr. Manisha Singla**
Ayurvedic Management of Vocal Cord Growth: A Non-Invasive Case Study
- **Dr. Dhanashri Khandebharad**
Utility of Panchakarma in the Management of Prameha with Special Reference to Type 2 Diabetes Mellitus – A Case Study
- **Dr. Pinaben V. Dalshaniya**
Reversing Obesity through Ayurveda: A Case Study in the Era of Lifestyle -Induced Disorders

Recognised Poster Presentations

- **Vedantsinh Thakor**
Ayurgenomics: Scientific Correlation of Prakriti with Genomic Signatures for Advancing Personalised Medicine



- **Dr. Pooja Sopan Khose**
Nebulization: An Ayurvedic Perspective
- **Dhrithi P. Bhat**
Development and Preliminary Validation of an Ayurvedic Diagnostic Questionnaire for Apana Vata Dushti in Women with PCOS/PCOD: A Pilot

The awardees were formally felicitated on stage by Dr. Viraj Boriya and Dr. Shidhi Nath, on behalf of the Ayur Vaidya Foundation, acknowledging their scholarly excellence and contribution to strengthening evidence-oriented Ayurveda.

Concluding Perspective

The Scientific Research segment of AyurMahotsava 2025 demonstrated that Ayurveda's academic landscape is progressively transitioning toward:

- Structured clinical documentation
- Research validation frameworks
- Interdisciplinary collaboration
- Evidence-informed therapeutic application
- Ethical and methodological standardisation

The quality and depth of submissions reflect an evolving academic culture committed to enhancing Ayurveda's scientific credibility while preserving its classical philosophical foundations.

Through this platform, AyurMahotsava has contributed meaningfully to fostering a responsible, research-driven, and globally conscious Ayurveda scholarship ecosystem.

AYUR VAIDYA
FOUNDATION



Section VI

**Ayurveda Startup and Innovation
Conclave**

Ayurveda Startup and Innovation Conclave

Ayurveda Tank of India

Introduction and Strategic Context

In recognition of the growing role of innovation, entrepreneurship, and enterprise development in strengthening traditional systems of medicine, Ayur Mahotsava 2025 – National Ayurveda Festival, organised by Ayur Vaidya Eduhealth foundation in association with AyushExcil, convened the first structured national startup conclave dedicated exclusively to Ayurveda, titled “Ayurveda Tank of India.”

The conclave was held on Day Two of the festival (13 December 2025) and was conceptualised as a national platform for dialogue, mentorship, and evaluation of Ayurveda-based startups, aligned with contemporary healthcare needs, regulatory frameworks, and national innovation priorities.

This initiative acknowledged the increasing emergence of Ayurveda startups across pharmaceuticals, wellness services, digital health, diagnostics, education, supply chains, and technology platforms, while also recognising the absence of a formal, sector-specific national forum to support their structured growth.

Traditional Invocation

The Ayurveda Tank of India was designed with the following strategic objectives:

- To provide a credible national forum for Ayurveda startups to present validated ideas and scalable business models
- To enable constructive evaluation and mentorship by senior leaders from industry, policy, and technology domains
- To encourage responsible innovation rooted in Ayurvedic principles, scientific evidence, and regulatory compliance
- To facilitate interaction between startups, industry stakeholders, investors, and policymakers
- To lay the foundation for a sustainable national ecosystem supporting Ayurvedic entrepreneurship

The conclave positioned entrepreneurship not as a departure from classical Ayurveda, but as a continuation of its adaptive and applied tradition in contemporary contexts.



Structure and Format of the Conclave

The conclave followed a structured and mentorship-oriented format, ensuring depth of engagement rather than purely competitive presentation.

1. AYUSIP – Ayurvedic Hydration Mix

By Mr. Anup Karande

AYUSIP is a 100% natural Ayurvedic hydration mix developed using classical Drava Paka Kalpana. It offers a clean alternative to chemical ORS and energy drinks, supporting hydration, digestion, and energy through time-tested Ayurvedic ingredients.

2. SWASTHA – Digital Preventive Ayurveda Platform

By Ms. Athmika Kumar

SWASTHA is an AI-assisted, Vaidya-supervised digital platform delivering personalized daily preventive Ayurveda. By integrating Prakriti, Agni, and lifestyle data, it enables early imbalance detection and structured, explainable Ayurvedic guidance for long-term holistic wellness.

3. Bappa Ayurved – Ayurvedic Sexual Wellness

By Mr. Shivansh Mishra

Bappa Ayurved modernizes classical Ayurvedic Vajikaran into a palatable, user-friendly tablet for holistic sexual wellness and vitality. Designed for both men and women, it offers a natural, multidimensional alternative to chemical-based sexual wellness and performance-focused products.

4. Netraum Ayurveda - Non-Surgical Ayurvedic Cataract Care Protocol

By Ms. Nayna Agrawal

This innovation presents a non-surgical Ayurvedic protocol for early-stage cataract management. Rooted in Shalakyta Tantra, it aims to improve visual comfort and clarity through safe, affordable, and non-invasive care, addressing gaps in accessible eye health solutions.

5. Honeyum | Advaitam Ayurveda - Ayurvedic Honey-Based Sachet Remedies

By Shri Narayan Laduna

Ayurvedic Honey-Based Sachet Remedies offer ready-to-use, single-serve formulations infused in honey for improved absorption and convenience. Designed to enhance compliance with traditional remedies, the innovation enables scalable applications across wellness, retail, FMCG, and e-commerce markets.



6. Ayushala - Ayurvedic Artificial Intelligence Platform

By Dr. Arun Sharma

This platform enables computational modeling of Ayurvedic principles using artificial intelligence. Designed for research, education, and industry support, it addresses digitization gaps in Ayurveda by transforming classical logic into structured, usable data systems for scalable applications.

7. PTCD – Ayurvedic Therapeutic Chocolate for Mental Wellness

By Mr. Aum Shukla

PTCD is a functional chocolate infused with Ayurvedic herbs to support mental wellness and stress management. Combining Ayurveda with modern food technology, it improves user compliance and accessibility in nutraceutical, functional food, and preventive mental health solutions.

8. Parasnath - Speciality Ayurveda Franchisee Model

By Dr. Balchandra Mahamuni

This innovation proposes a nationwide franchise model to establish organized super speciality Ayurveda clinics. Aimed at structured healthcare delivery, it envisions large-scale consultant onboarding, multi-vertical clinical services, and sustainable growth within India's evolving Ayurveda ecosystem.

Key elements of the format included:

- Curated selection of 8 Ayurveda-focused startups
- Time-bound pitch presentations covering concept, innovation, and scalability
- Interactive feedback sessions with jury members
- Emphasis on regulatory readiness, ethical practice, and long-term sustainability

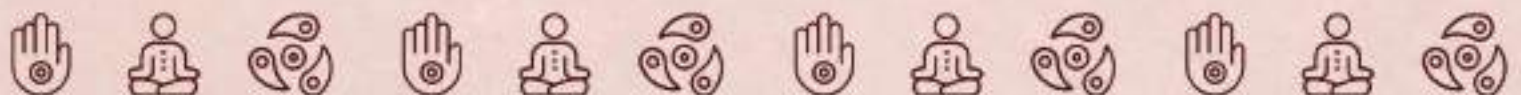
The format prioritised learning, refinement, and sector-specific guidance, aligning with national startup support frameworks.

Startup Pitch Presentations

A total of 8 startups participated in the Ayurveda Tank of India, representing diverse segments of the Ayurvedic value chain.

Each startup presentation addressed:

- Conceptual foundation and relevance to Ayurveda
- Product or service differentiation



- Market applicability and scalability
- Regulatory and compliance considerations
- Alignment with Ayurvedic principles and classical knowledge

The pitch sessions enabled startups to receive domain-specific insights, helping them refine their approach within the realities of the AYUSH ecosystem.

Innovation in Ayurveda: Emerging Dimensions

Deliberations during the conclave highlighted that innovation in Ayurveda is evolving across multiple interconnected dimensions:

- **Product Innovation**

Classical formulations adapted with improved dosage forms, quality assurance, and standardisation

- **Process Innovation**

Advancements in manufacturing, sourcing, documentation, traceability, and clinical validation

- **Platform Innovation**

Digital health tools, tele-Ayurveda services, data-driven wellness models, and technology-enabled outreach

The conclave reinforced the principle that innovation in Ayurveda must remain anchored in Shastra, scientific validation, and ethical practice, while responding to contemporary healthcare challenges.

AYUR VAIDYA
FOUNDATION



Ayurveda Startup and Innovation Conclave

Ayurveda Tank of India

The Ayurveda Tank of India was guided by a distinguished jury and mentor panel comprising nationally recognised leaders from the Ayurveda industry, corporate healthcare, policy institutions, and technology sectors.



Mr. Ramanathan Sridhar

Chief Executive Officer, SNA Oushadhasala
Director, AYUSHEXCIL, Ministry of AYUSH

Mr. Ramanathan Sridhar is a senior Ayurveda industry leader with expertise in institutional development, manufacturing, and international market engagement. As Director at AyushExcil, he has contributed significantly to export readiness, regulatory alignment, and global positioning of Ayurveda within national trade and policy frameworks.



Mr. Ajit Pal Singh

Vice President & Business Head,
Emami Limited

Mr. Ajit Pal Singh is an experienced FMCG and healthcare business leader with strong expertise in brand strategy, portfolio management, and market expansion. His work supports the integration of wellness and traditional health products into regulated, large-scale consumer markets.



Dr. Partha Narayan Joardar

Additional Chief Marketing Manager,
Arya Vaidya Sala, Kottakkal

Mr. Partha Narayan Joardar brings extensive experience in sales strategy and institutional outreach within a leading legacy Ayurveda organisation. His expertise lies in aligning classical products with contemporary distribution models while preserving ethical standards and institutional credibility.



Mr. Madhusudhan Chauhan
Chief Executive Officer & Director,
Jiva Ayurveda

Mr. Madhusudhan Chauhan is a healthcare executive known for integrating Ayurveda with organised clinical services, digital platforms, and patient-centric delivery models. His leadership reflects the evolving interface between traditional medicine and modern healthcare systems.



Dr. Sanchit Sharma
Director, Ayouthveda
(AIMIL Group)

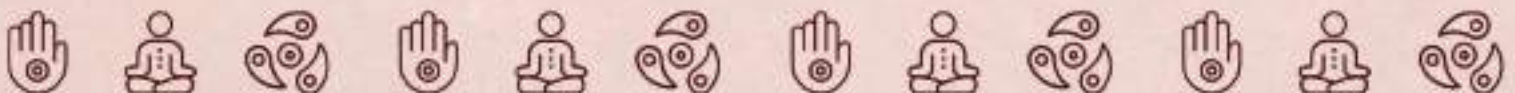
Dr. Sanchit Sharma focuses on research-led innovation and integrative health solutions within the AYUSH ecosystem. His work bridges traditional medicine, diagnostics, and technology-enabled healthcare, aligned with national priorities on evidence-based and responsible entrepreneurship.



Mr. Agnim Gupta
Principal – Technology and Growth
Amrutam Pharmaceuticals

Mr. Agnim Gupta is a technology and growth strategy professional with experience in scaling innovation-driven ventures. His expertise spans digital infrastructure, product development, and growth frameworks aligned with regulatory, governance, and sector-specific compliance requirements.

- Market positioning and scalability
- Regulatory compliance and export readiness
- Branding, trust, and consumer communication in Ayurveda
- Technology adoption aligned with sector ethics



Policy and Ecosystem Alignment

The Ayurveda Tank of India was conceptually aligned with:

- National startup and innovation priorities
- AYUSH sector development frameworks
- Evidence-based and regulated healthcare entrepreneurship

The conclave reinforced the importance of structured governance, scientific integrity, and policy coherence in scaling Ayurveda-based enterprises.

Outcomes and Way Forward

The Ayurveda Tank of India concluded with a shared consensus that entrepreneurship will play a defining role in the future growth and global positioning of Ayurveda, provided it remains aligned with:

- Classical foundations
- Scientific validation
- Regulatory compliance
- Ethical healthcare delivery

Encouraged by the depth of engagement and relevance of discussions, Ayur Vaidya Foundation envisages the Ayurveda Tank of India as a recurring national initiative, with future editions proposed to include:

- Structured incubation and mentorship linkages
- Policy roundtables and regulatory consultations
- Investor connect programmes
- National and international collaborations

Through this initiative, Ayur Vaidya Foundation has laid the groundwork for a credible, inclusive, and future-ready Ayurveda startup ecosystem, strengthening Ayurveda's role in national health, innovation, and economic development.



Section VII

**Ayurveda Industry and Policy
Dialogue**

Ayurveda Industry and Policy Dialogue

Context and Purpose

Section VII of AyurMahotsava 2025 was conceptualised as a strategic dialogue platform to examine Ayurveda as a coordinated institutional ecosystem operating across three interdependent domains — education and research institutions, industrial and healthcare service enterprises, and policy and regulatory frameworks. The segment acknowledged that the contemporary evolution of Ayurveda depends not only on excellence within individual domains but on structured coordination among knowledge generation, service delivery, and governance systems.

The dialogue was therefore designed to address systemic integration challenges and to identify operational pathways enabling Ayurveda to function as a coherent national healthcare and knowledge sector. The proceedings recognised that academic institutions sustain knowledge transmission and research foundations, industrial enterprises ensure formulation development and healthcare accessibility, and policy frameworks provide regulatory clarity, infrastructural support, and strategic direction.

By bringing these domains onto a shared deliberation platform, Section VII aimed to strengthen institutional linkages, promote accountability, and support long-term sectoral maturity.

Functional Structure of the Dialogue

The segment comprised two structured sessions:

Session	Focus Area
Session 1	Industry–Academia–Government Interface
Session 2	Policy Dialogue with Industry Stakeholders



Both sessions were conducted in moderated, panel-based formats ensuring representation across academia, industry, and institutional governance. Discussions were organised into thematic deliberation segments rather than individual addresses, enabling structured problem analysis and outcome-oriented dialogue. This format supported cross-sector exchange, synthesis of perspectives, and identification of shared priorities.

Stakeholder Representation

The sessions brought together a diverse group of institutional actors representing:

- National and legacy Ayurvedic pharmaceutical manufacturers
- Institutional pharmacies and heritage clinical practice centres
- Academic leaders, faculty members, and education-focused institutions
- Healthcare service delivery organisations with structured clinical operations
- Sector development enterprises and emerging innovation-driven brands
- Policy-linked institutional representatives and governance stakeholders

This representation enabled discussion spanning knowledge systems, clinical accountability, production governance, compliance structures, research integration, workforce development, and sector scalability.

Panel Participant Record

The following representatives contributed to the dialogue across Sessions 28 and 29:

- Mr. Madhusudan Chauhan — CEO, Jiva Ayurveda
- Dr. Sridhar Ramanathan — CEO, SNA Oushadhasala, Director, AYUSHEXCIL
- Mr. Ajit Pal Singh — Vice President, Emami Limited
- Dr. Ruchi Srivastava — Multani Pharmaceuticals
- Dr. Partha Narayan Joardar — VP Marketing, Arya Vaidya Sala, Kottakkal
- Dr. E. T. Krishnan Moose — Director, Vaidyaratnam Oushadhasala
- Mr. Agnim Gupta — Director, Amrutam Ayurveda
- Dr. Aditya Mishra — Medico Marketing, Zandu Pharmaceuticals
- Mr. Vikram Baidyanath — Group CEO, Baidyanath Group
- Dr. Sanchit Sharma — Director, AIMIL Pharmaceuticals



Industry–Academia–Government Interface

Thematic Scope

Session 28 examined structural and functional linkages among academic training systems, research mechanisms, industrial production environments, and policy facilitation frameworks. The central premise of the session was that Ayurveda's growth requires institutional convergence across education, research, manufacturing, and governance rather than fragmented sectoral efforts.

The session explored how academic knowledge systems, clinical practice, formulation manufacturing, and regulatory support can operate within a coordinated framework that strengthens evidence generation, quality assurance, and professional competence. Emphasis was placed on transitioning from isolated initiatives to system-level integration.

Key Deliberation Areas

Academic–Industry Integration

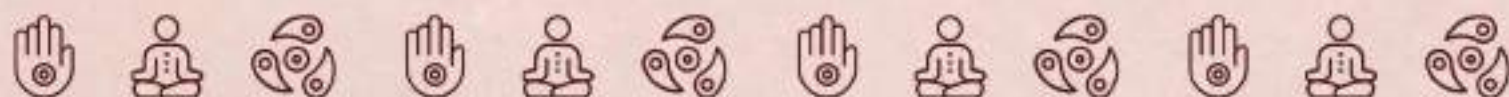
Participants identified the need to bridge the gap between institutional education and industry operations. While academic institutions provide theoretical and clinical foundations, exposure to production environments, laboratory quality systems, regulatory documentation practices, and industrial workflows remains limited for many trainees.

Industry representatives expressed readiness to support structured internship models, apprenticeship pathways, and laboratory immersion programs. Academic participants highlighted the value of co-supervised research, formulation development projects, and industry-supported doctoral studies to strengthen applied learning and research relevance.

The dialogue underscored that such integration enhances workforce preparedness and aligns educational outputs with sectoral requirements.

Policy Facilitation for Collaboration

Participants discussed the role of governance in enabling institutional collaboration. The need for grant support for interdisciplinary research, streamlined approval processes for collaborative studies, and policy frameworks that recognise Ayurveda's epistemological distinctiveness were highlighted.



Workforce and Skill Preparedness

Discussion extended to workforce readiness, with identification of skill gaps in analytical testing, regulatory documentation, research methodology, and quality system implementation. Industry representatives proposed structured certification pathways and exposure visits to production facilities, while academic institutions emphasised curriculum updates reflecting contemporary quality and documentation systems.

The session highlighted the importance of developing professionals capable of operating across clinical, research, and industrial contexts.

Digital Infrastructure

Participants recognised digital systems as essential infrastructure for scalable evidence generation. Electronic clinical records, data management platforms, and technology-supported traceability systems were identified as tools enhancing transparency, reproducibility, and outcome tracking.

Digital integration was seen not as a technological upgrade alone, but as an enabler of systematic documentation and research analytics across institutions.

Outcomes — Session 1

The session established directional consensus on:

- Structured industry-supported academic research collaboration
- Institutionalisation of internship and applied skill pathways
- Adoption of harmonised documentation frameworks
- Recognition of digital systems as core sector infrastructure
- Establishment of recurring tri-sector consultation mechanisms

These outcomes reinforced the need for coordinated institutional development to strengthen Ayurveda's academic foundations, research credibility, and professional workforce capacity.

Policy Dialogue with Industry Stakeholders

1. Thematic Scope

Session 29 constituted the industry-facing policy dialogue of Section VII and focused on examining the regulatory, quality, and operational environments within



which Ayurvedic enterprises function. The session was designed to bring forward ground-level industry realities and align them with governance frameworks, national health priorities, and evolving quality expectations. Unlike Session 28, which emphasised tri-sector integration, this session concentrated on the industrial domain as a structured economic, healthcare, and knowledge-delivery sector. The dialogue addressed how policy structures, regulatory systems, manufacturing governance, and market conduct influence the scalability, credibility, and sustainability of Ayurvedic enterprises.

The session recognised Ayurveda industry not merely as a manufacturing sector, but as a healthcare-linked ecosystem responsible for ensuring safety, quality, and authenticity of products delivered to society. The deliberations therefore focused on strengthening regulatory clarity, institutional accountability, and research integration as pillars of responsible industry growth.

2. Key Deliberation Areas

Regulatory Frameworks and Licensing Processes

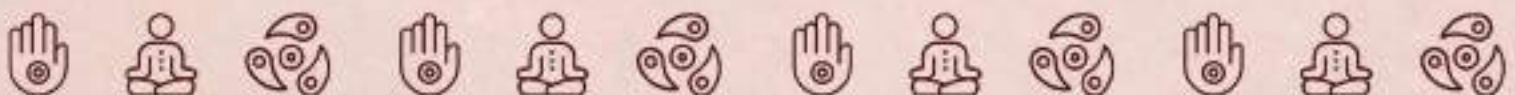
Participants discussed procedural complexities encountered in licensing, product categorisation, and compliance documentation. Variations in interpretation of regulatory provisions across jurisdictions were identified as areas requiring harmonisation.

Stakeholders emphasised the importance of clearly distinguishing classical formulations from proprietary products within regulatory systems to avoid procedural ambiguity. The need for predictable approval timelines, transparent documentation requirements, and consistent interpretation of compliance norms was highlighted as essential for encouraging research investment and enterprise stability.

It was observed that regulatory clarity supports not only business growth but also public confidence in Ayurveda products by ensuring structured oversight and accountability.

Quality Governance and Manufacturing Accountability

The dialogue devoted substantial attention to quality governance as the foundation of industry credibility. Participants underscored the adoption of Good Manufacturing Practices, validated production processes, and laboratory-supported quality testing as essential elements of responsible pharmaceutical operations.



Raw material traceability systems were discussed as a critical component of quality assurance, ensuring that medicinal plant sourcing, processing, and storage follow documented and verifiable pathways. Industry representatives highlighted the importance of stability studies, batch documentation, and analytical validation in demonstrating consistency and safety of formulations.

The session emphasised that quality governance should be viewed as a sector-wide institutional culture rather than a compliance formality.

Research-Linked Product Development

A significant portion of the discussion focused on integrating research into product development cycles. Participants acknowledged that research documentation, clinical validation, and post-market data collection strengthen the credibility and acceptance of Ayurvedic products in both domestic and international contexts.

It was noted that collaboration between industry, academic institutions, and research bodies enables development of structured evidence without compromising classical formulation principles. Participants advocated increased support for formulation-linked research studies, pharmacological investigations, and observational clinical documentation.

The role of research in guiding product improvement, safety monitoring, and knowledge dissemination was recognised as a long-term growth driver.

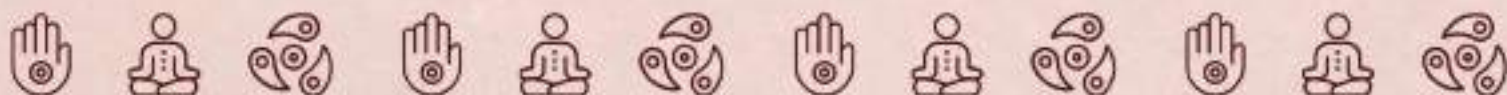
Responsible Market Practices and Public Communication

The session addressed the importance of ethical communication of traditional knowledge. Stakeholders emphasised the need to avoid exaggerated claims, ensure responsible marketing, and provide consumer education grounded in authenticity and safety.

Alignment of market communication with public health objectives was discussed, with emphasis on positioning Ayurveda products as supportive to preventive and wellness-oriented healthcare. The need for clear labelling, transparent information, and adherence to regulatory advertising norms was underlined as part of industry accountability.

Policy-Industry Coordination Mechanisms

Participants recognised that sustainable sector development requires continuous dialogue between policymakers and industry representatives. The session highlighted the value of periodic consultative forums, structured feedback



mechanisms, and institutional channels for addressing emerging regulatory or operational challenges.

The importance of policy responsiveness to technological change, research integration, and global market dynamics was also discussed. Such coordination was viewed as a means to ensure that policy frameworks remain facilitative while upholding quality and safety standards.

Outcomes — Session 2

The deliberations resulted in a shared recognition of the following sectoral directions:

- Regulatory clarity and harmonised interpretation as enablers of sustainable industry growth
- Adoption of uniform quality governance systems as a sector-wide priority
- Integration of research and documentation within product development cycles
- Institutionalisation of policy–industry consultation platforms
- Strengthening of ethical communication and consumer awareness practices

These outcomes collectively reinforced the importance of structured governance, research orientation, and professional accountability within Ayurvedic enterprise systems.

Significance

Section VII presented Ayurveda as a coordinated institutional ecosystem where education, industry, and governance function through structured interaction. Discussions of Sessions 28 and 29 emphasized that long-term advancement depends on integrating research, manufacturing quality, educational reform, and supportive policy frameworks.

The dialogue identified pathways for research alignment, quality governance, workforce readiness, digital documentation, and policy-enabled development. By uniting academic representatives, industry leaders, and governance stakeholders, Section VII strengthened cross-sector understanding and supported collaborative, accountable growth of the Ayurveda ecosystem.

The proceedings emphasized that Ayurveda's evolution requires institutional coherence, regulatory maturity, and evidence-based professional practice to sustain its expanding national and global role.



Section VIII

National Ayurveda Exhibition

National Ayurveda Exhibition

Context and Purpose

The National Ayurveda Exhibition constituted the sectoral demonstration and interaction platform of AyurMahotsava 2025. Conceived as an institutional interface rather than a conventional commercial expo, the exhibition presented Ayurveda as a structured operational ecosystem encompassing pharmaceutical manufacturing, research documentation, academic integration, technological systems, preventive healthcare, and entrepreneurial innovation.

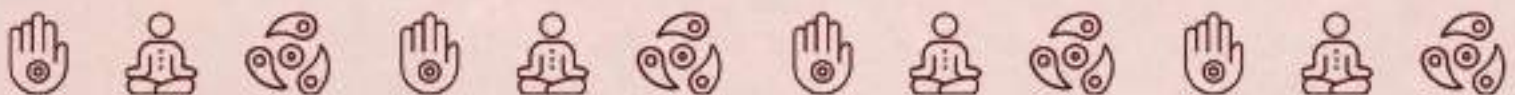
The objective was to create a live knowledge environment where the functional dimensions of Ayurveda could be observed in continuity — from raw material sourcing and formulation development to quality assurance, documentation practices, and clinical application. The exhibition served as a bridge between institutional knowledge systems and public interface, facilitating professional exchange while reinforcing standards of quality, safety, and accountability.

Structural Design

The exhibition layout was organised into curated thematic clusters to enable systematic understanding of the Ayurveda value chain. The design ensured logical progression from knowledge systems to production, validation, and service delivery:

Pavilion / Zone	Functional Orientation
Institutional Knowledge Pavilion	Academic, research, and documentation frameworks
Pharmaceutical & Manufacturing Pavilion	Formulation production systems and quality governance
Technology & Digital Systems Pavilion	Clinical documentation, data systems, and analytics tools
Startup & Innovation Zone	Emerging enterprises, new delivery models, and product innovation
Preventive Health & Wellness Pavilion	Lifestyle, integrative care, and preventive health solutions

This structure supported professional walkthroughs and domain-specific engagement.



Participation Profile

The exhibition featured participation from over 60 organisations, representing the full spectrum of the Ayurveda ecosystem — including large-scale manufacturers, heritage institutional pharmacies, regional formulation houses, herbal enterprises, wellness brands, academic platforms, technology-linked entities, and emerging startups. This diversity ensured representation across production scale, institutional lineage, knowledge streams, and innovation stages.

Leading national and legacy manufacturers such as Zandu, Multani Pharmaceuticals, and Baidyanath Group formed the anchor industrial presence, demonstrating large-scale formulation systems, quality governance structures, and structured production environments aligned with national regulatory frameworks.

Brand Partners of the Exhibition

- **Zandu Pharmaceuticals:** National Ayurvedic brand demonstrating large-scale manufacturing, consumer healthcare integration, and quality governance.
- **Shree Baidyanath Ayurved Bhawan Pvt. Ltd.:** Heritage-based national pharmaceutical manufacturer representing industrial-scale classical formulation
- **Multani Pharmaceuticals:** Structured Ayurvedic manufacturer focused on formulation integrity and compliance-driven production systems.
- **Jeena Seekho Lifecare:** Heritage-based national pharmaceutical manufacturer representing industrial-scale classical formulation systems.
- **AIMIL Pharmaceuticals:** Research-linked herbal pharmaceutical enterprise with national presence.
- **Arya Vaidya Sala, Kottakkal:** Heritage Ayurvedic institution representing classical formulations, institutional pharmacy systems, and integrated clinical
- **Vaidyaratnam Oushadhasala:** Traditional pharmacy institution integrating manufacturing, clinical services, and education.
- **SDM Pharmacy:** Institutional pharmacy associated with structured Ayurvedic clinical and formulation systems.



National & Regional Ayurvedic Manufacturers

- Uma Ayurveda – Ayurvedic formulation and wellness enterprise.
- Virgo Pharma UAP – Pharmaceutical manufacturer associated with Ayurvedic product lines.
- Apeksha Ayurveda – Herbal formulation enterprise.
- Ayamveda – Ayurveda-based product and wellness solutions enterprise.
- Advaitam Ayurveda – Formulation-focused Ayurveda enterprise.
- SB Herbals – Herbal therapeutic formulation manufacturer.
- Lamar Healthcare – Herbal and therapeutic formulation enterprise.
- Vanoshidi Ayurveda – Ayurvedic formulation brand.
- Sure Cure Remedies – Herbal remedy manufacturer.
- Arogyam Herbals – Ayurvedic herbal product manufacturer.
- Ayurhelix – Ayurveda-aligned wellness product enterprise.
- Advaya Organics – Organic and herbal product enterprise.
- Ayushuddh Natural – Herbal formulation brand.
- Dhatri Shah Pharmacy – Ayurvedic dispensing and formulation enterprise.
- Kenko Healthcare – Wellness and therapeutic formulation enterprise.
- Giosun Healthcare – Herbal and wellness manufacturer.
- Shivangen Ayurveda – Ayurvedic formulation enterprise.
- Pukhraj Ayurveda – Traditional formulation enterprise.
- Harkeshav Ayurveda – Herbal and Ayurvedic formulation manufacturer.
- Sukhayubhav Pharmaceuticals – Ayurvedic pharmaceutical enterprise.

Traditional Knowledge & Herbal Enterprises

- Adivasi Hair Oil – Traditional herbal oil preparation enterprise.
- Adivasi Jadibuti – Plant-derived traditional herbal preparation enterprise.
- Khojati Herbals – Herbal therapeutic formulation enterprise.
- Soham Crop and Wellness – Agro-linked herbal enterprise.
- Civil Mantra – Traditional plant-based product enterprise.
- Vedic Agro – Agro-linked herbal cultivation enterprise.
- Sennera Estates Pvt. Ltd. – Natural products and herbal sourcing enterprise.

Wellness, Lifestyle & Integrative Health Enterprises

- Ayush Life Elements – Preventive health support enterprise.



- Fit Life Wellness – Holistic lifestyle wellness brand.
- HappyMillions – Lifestyle and wellness product enterprise.
- Kbir Wellness – Preventive care wellness brand.
- Namoh Wellness – Wellness-oriented preventive product enterprise.
- Daves Noni Wellness – Plant-derived wellness product enterprise.
- Maa Mithara – Herbal wellness product enterprise.

Technology & Systems-Linked Enterprises

Osin Enterprises – Allied healthcare systems and product distribution enterprise.
 Enagic India – Wellness technology company presenting water ionisation systems.
 Ayurveda Yogashram – Integrative wellness and traditional health practice institution.

Academic & Knowledge Platforms

Pratyaksh Ayurveda – Academic and training platform supporting structured Ayurvedic education and knowledge dissemination.

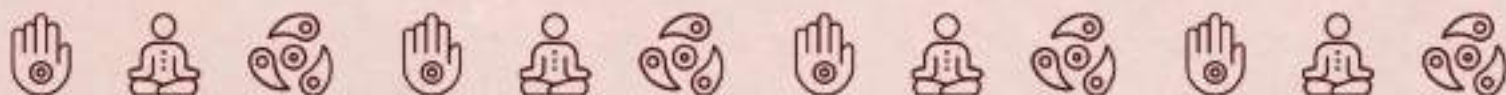
Functional Demonstration Areas

Exhibitors demonstrated:

- Controlled manufacturing and batch documentation systems
- Quality assurance protocols and analytical testing processes
- Raw material sourcing traceability models
- Research documentation and clinical data presentation
- Digital health record and documentation tools
- Startup-led innovation in service delivery and product formats

Visitor Engagement and Participation

The National Ayurveda Exhibition recorded an estimated 20,000+ visitors across the three-day duration, reflecting substantial engagement from both professional and public audiences. The visitor profile demonstrated wide sectoral diversity, including practicing clinicians, academic faculty, research scholars, postgraduate and undergraduate students, pharmaceutical and wellness industry professionals, entrepreneurs, and members of the general public with interest in traditional healthcare systems.



The sustained footfall indicated the exhibition's success as a knowledge-access platform rather than a purely commercial showcase. Professional visitors engaged in technical discussions on manufacturing systems, documentation standards, research frameworks, and digital integration tools, while students and trainees utilised the platform for experiential exposure to industry and institutional operations. Public visitors accessed preventive health information, wellness demonstrations, and awareness-oriented interactions that supported Ayurveda's community outreach objectives.

Structured walkthroughs, exhibitor interactions, and knowledge-sharing discussions facilitated meaningful exchange between institutions, enterprises, and end-users. The exhibition thus functioned as an interface connecting technical knowledge systems with societal awareness, contributing to broader understanding of Ayurveda's preventive, therapeutic, and research dimensions.

Sectoral Outcomes

The exhibition contributed to measurable sectoral and institutional outcomes:

- **Academic-Industry Research Linkages:** Initial discussions were initiated between academic institutions and manufacturing entities regarding collaborative research studies, documentation projects, and knowledge-sharing
- **Technology Awareness and Adoption Dialogue:** Exhibitor demonstrations of digital record systems, analytics tools, and traceability technologies increased awareness regarding technology-enabled documentation and data management within Ayurvedic practice and manufacturing.
- **Startup and Enterprise Networking:** Emerging enterprises engaged with established institutions, opening dialogue for mentorship, supply-chain collaboration, and knowledge support. This facilitated integration of innovation-driven enterprises into the broader ecosystem.
- **Visibility of Quality and Compliance Systems:** Exhibits detailing quality assurance protocols, laboratory validation practices, and batch documentation frameworks strengthened professional understanding of compliance as a foundational requirement for sector credibility.



- **Public Health Awareness:** The exhibition enhanced public exposure to preventive health principles, lifestyle guidance, and integrative wellness approaches aligned with Ayurveda's foundational philosophy.

Contributed to knowledge transfer, professional networking, and institutional visibility across the Ayurveda value chain.

Significance

The National Ayurveda Exhibition functioned as a structured sector integration platform, demonstrating Ayurveda's operational maturity across manufacturing governance, research documentation, educational frameworks, technological integration, and enterprise development. By presenting these dimensions within a coordinated institutional setting, the exhibition illustrated how traditional knowledge systems operate within contemporary quality, safety, and accountability frameworks.

The segment reinforced Ayurveda's transition toward evidence-oriented and professionally governed healthcare practice. It strengthened linkages among academia, industry, innovators, and the public, and underscored the role of exhibitions as knowledge-dissemination and sector-coordination platforms rather than solely commercial displays. Through structured engagement, the exhibition contributed to long-term ecosystem strengthening and enhanced national visibility of Ayurveda as a disciplined, quality-driven healthcare sector.

AYUR VAIDYA
FOUNDATION



Section IX

Honours, Awards and Recognition

Honours, Awards and Recognition

Section XI of AyurMahotsava 2025 documented the structured recognition of leadership, scholarship, institutional contribution, innovation, and professional excellence within the Ayurveda ecosystem. The honours segment was conceived not merely as a ceremonial activity but as an institutional affirmation of contribution to the growth, credibility, and societal relevance of Ayurveda and allied traditional health systems.

These recognitions reflected the festival's commitment to acknowledging individuals and organisations who have demonstrated sustained engagement in knowledge preservation, quality-governed manufacturing, clinical service, academic advancement, research participation, and responsible enterprise development. The awards ceremony was conducted as part of the formal proceedings segment in the presence of dignitaries, senior professionals, academicians, industry leaders, and delegates, reinforcing the role of recognition as a mechanism of institutional endorsement and professional encouragement.

National Ayurveda Excellence Awards

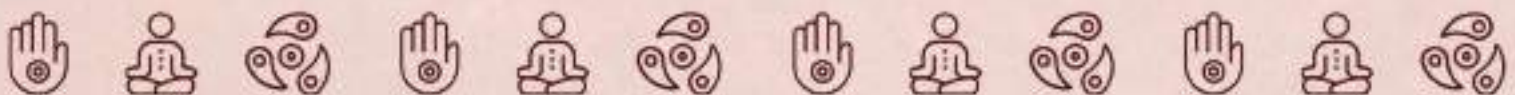
This category recognised enterprises and professionals demonstrating leadership in manufacturing governance, product integrity, enterprise development, and institutional contribution to Ayurveda's professional ecosystem.

Awardees included:

This category recognised enterprises and professionals demonstrating structured leadership in manufacturing governance, product integrity, enterprise development, sector participation, and quality-driven institutional engagement. The awards acknowledged organisations that have contributed to the evolution of Ayurveda's industrial and professional ecosystem through disciplined operational systems and responsible participation.

- **Ayurveda National Leadership Award — Multani Pharmaceuticals**

Recognised for contribution to structured pharmaceutical manufacturing systems, formulation governance, and compliance-oriented production environments.



- **Ayurveda Leadership Excellence Award — Zandu Pharmaceuticals**
This recognition acknowledged the organisation's sustained contribution to the organised consumer healthcare segment through structured Ayurvedic manufacturing and responsible market integration.
- **Wellness Brand of the Year — Amrutam Pharmaceuticals**
This recognition acknowledged innovation-driven wellness product systems aligned with preventive healthcare orientation. The award citation highlighted the organisations' contribution to developing lifestyle-support products that promote holistic well-being within the framework of Ayurvedic principles.
- **Leadership Award in Ayurvedic Pharma Excellence — AIMIL Pharmaceuticals**
The award recognised AIMIL Pharmaceuticals for its research-linked herbal pharmaceutical engagement and structured participation in quality-governed production systems. The citation highlighted the organisation's contribution to integrating research orientation, documentation practices, and compliance frameworks within herbal pharmaceutical operations.

Recognition of Eminent Vaidyas and Thought Leaders

This category honoured senior professionals, institutional leaders, mentors, and knowledge custodians whose contributions have strengthened the continuity of classical Ayurvedic knowledge, professional mentorship structures, clinical service systems, academic engagement, and organised sectoral development. These recognitions were intended to acknowledge long-term dedication, leadership responsibility, and contributions that extend beyond individual practice to broader institutional and societal impact.

- **Global Ayurveda Wellness Ambassador Award — Mr. Vikram Baidyanath (Group President, Baidyanath Group)**
This recognition acknowledged leadership within heritage pharmaceutical institutions and representation of Ayurveda at national and international levels.
- **Ayurveda Global Impact Award — Mr. Madhusudan Chauhan (Director, Jiva Ayurveda)**
This award acknowledged contributions to large-scale service delivery models and structured clinical practice systems within organised Ayurveda healthcare frameworks.



- **Ayurveda Pharma Visionary Leader Award - Dr. Sanchit Sharma (MD, AIMIL Pharmaceuticals)**

This recognition honoured enterprise leadership and sector engagement in the herbal and Ayurvedic pharmaceutical domain.

This category of recognition honoured senior professionals whose decades of dedication have contributed to the preservation, transmission, and evolution of Ayurveda as a living medical tradition. The award acknowledged sustained engagement in clinical practice, academic mentorship, institutional guidance, and the safeguarding of classical knowledge frameworks within contemporary professional environments. Each awardee was recognised not only for individual professional accomplishment, but for their role in strengthening intergenerational knowledge transfer, maintaining ethical practice standards, and contributing to the stability and maturity of the Ayurveda ecosystem. Their work represents continuity between classical wisdom, applied clinical experience, and evolving institutional structures. Collectively, their contributions have helped reinforce Ayurveda's credibility, resilience, and relevance within contemporary healthcare discourse.

- **Dr. Rampal Somani**

Recognised for longstanding engagement in Ayurvedic pharmaceutical standards and professional contribution to formulation governance. His work has been associated with promoting disciplined approaches to classical formulations within structured quality environments.

- **Dr. Partap Chauhan**

Acknowledged for clinical leadership and sustained contribution to integrative practice approaches that connect classical Ayurvedic principles with contemporary healthcare needs.

Collectively, these Lifetime Achievement recognitions reflected institutional appreciation of experience, mentorship, and professional dedication. They symbolised respect for individuals whose careers have contributed to sustaining Ayurveda's continuity as a knowledge system, clinical discipline, and socially relevant healthcare tradition.

- **Dr. Aditya Mishra**

This recognition acknowledged for his professional contribution to the operational and organisational dimensions of Ayurveda-linked enterprise



environments. His engagement was noted in the context of structured participation in institutional ecosystems that support coordination between industry, professional practice, and sectoral development initiatives.

Young Researcher and Innovation Awards

The scientific segment of Ayur Mahotsava 2025 demonstrated significant academic engagement and research participation from scholars, practitioners, postgraduate trainees, and students across institutions. This component reflected the growing integration of research orientation, documentation discipline, and scholarly dialogue within the Ayurveda academic community.

The Young Researcher and Innovation Awards were instituted to encourage systematic inquiry, promote evidence-oriented thinking, and recognise emerging scholars who contribute to knowledge development through structured clinical observation, methodological clarity, and scholarly communication.

Abstract Participation Overview

The festival received a total of 298 scientific abstracts, representing a wide spectrum of clinical case studies, research-oriented investigations, documentation-based analyses, and conceptual explorations within Ayurveda practice and theory. The volume of submissions reflected both academic interest and the increasing engagement of scholars in research and documentation activities.

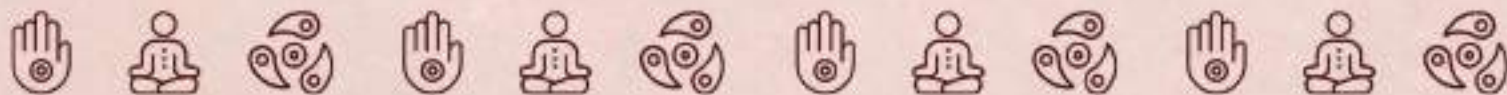
Following structured evaluation, the Scientific Committee selected:

- 118 Paper Presenters
- 78 Poster Presenters

The selection process was based on relevance to Ayurveda practice and research, clarity of documentation, methodological soundness, and contribution to scholarly dialogue. The acceptance process ensured that presentations aligned with academic rigor and professional standards.

Scientific Review Committee

The evaluation and review process was conducted by a five-member Scientific Committee responsible for assessing abstracts and ensuring scholarly quality:



Following structured evaluation, the Scientific Committee selected:

- Dr. Mrunal Arke
- Dr. Dhaval Dholakiya
- Dr. Divy Bhalodi
- Dr. Mehul Joshi
- Dr. Anupam Jangra

The committee examined submissions with reference to methodological clarity, clinical relevance, structured documentation, and adherence to academic presentation norms. Their role ensured that the scientific segment maintained institutional credibility and academic discipline.

Recognised Paper Presenters

- Dr. Manisha Singla — Ayurvedic Management of Vocal Cord Growth: A Non-Invasive Case Study
- Dr. Dhanashri Khandebharad — Utility of Panchakarma in the Management of Prameha w.s.r. to Diabetes Mellitus Type 2
- Dr. Pinaben V. Dalshaniya — Reversing Obesity through Ayurveda: A Case Study

Special Recognition by Jury

Based on presentation quality, analytical clarity, and scholarly merit, the jury identified six participants for special recognition during the proceedings. These recognitions were intended to encourage excellence in academic communication and promote continued research engagement among emerging professionals.

Recognised Poster Presenters

- Vedantsinh Thakor — Ayurgenomics and Prakriti-Genomic Correlation
- Dr. Pooja Sopan Khose — Nebulization: An Ayurvedic Perspective
- Dhrithi P. Bhat — Diagnostic Questionnaire Development for Apana Vata Dushti in PCOS

Recognition was conferred on stage by Dr. Viraj Boriya and Dr. Shidhi Nath on behalf of the organising foundation, acknowledging scholarly merit and encouraging continued research engagement.

Recognised Paper Presenters

- **Dr. Manisha Singla**

Recognised for a case study on Ayurvedic Management of Vocal Cord Growth through non-invasive approaches. The work highlighted clinical documentation, therapeutic planning, and outcome observation within a structured case framework.

- **Dr. Dhanashri Khandebharad**

Acknowledged for research on the Utility of Panchakarma in the Management of Prameha with reference to Diabetes Mellitus Type 2. The presentation demonstrated integration of classical therapeutic frameworks with case-based documentation.

- **Dr. Pinaben V. Dalshaniya**

Recognised for a case study on Reversing Obesity through Ayurveda. The work illustrated lifestyle-linked therapeutic approaches and structured patient monitoring.

Recognised Poster Presenters

- **Vedantsinh Thakor**

Recognised for work on Ayurgenomics, exploring correlations between Prakriti and genomic signatures, representing interdisciplinary academic exploration.

- **Dr. Pooja Sopan Khose**

Acknowledged for presenting an Ayurvedic perspective on Nebulization, reflecting interpretive engagement with classical principles in contemporary therapeutic contexts.

- **Dhrithi P. Bhat**

Recognised for development and preliminary validation of a diagnostic questionnaire for Apana Vata Dushti in women with PCOS/PCOD, demonstrating structured methodological design.

Ceremonial Recognition

The recognised presenters were felicitated on stage. The recognition symbolised institutional encouragement of scholarly engagement and reinforced the importance of research participation in strengthening Ayurveda's academic and clinical foundations.

Section X

Organisational Structure and Governance

Organisation & Organising Committee

A Ceremonial Tribute to Visionary Leadership, Institutional Excellence & Collective Commitment:

Our Vision

To elevate Ayurveda onto a global intellectual platform by fostering scientific dialogue, policy engagement, industry collaboration, and responsible innovation — thereby shaping a future where Ayurveda stands as a scientifically validated, globally respected healthcare system.

Our Mission

The mission of the organising body extends beyond the successful execution of an event. It is a commitment to institutional excellence, structured academic exchange, and ecosystem building. Through carefully curated scientific sessions, research presentations, industry participation, startup engagement, and dignitary with dignitaries dialogue, the Festival was envisioned as a national movement to strengthen the intellectual and entrepreneurial foundations of Ayurveda.

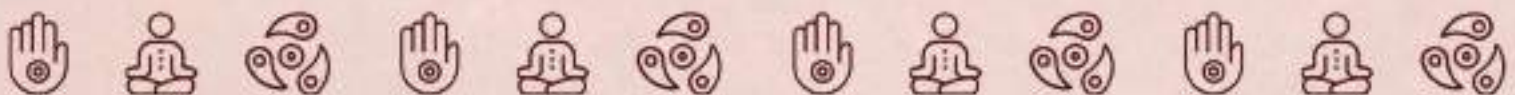
The Organising Institution

The National Ayurveda Festival & Expo was organised under a structured and visionary institutional framework that harmonised governance, academic integrity, and operational precision. The organising institution functioned not merely as an event facilitator, but as a custodian of intellectual standards, ceremonial dignity, and professional execution.

Every dimension of the Festival — from scientific deliberations and research scrutiny to exhibitions, the Ayurveda Tank startup conclave, protocol management for distinguished dignitaries, and delegate coordination — was carefully aligned with the broader vision of strengthening the national Ayurveda ecosystem.

Organising Leadership

At the helm of this grand initiative was Dr. Rishabh Dixit, Organising Chairman, whose visionary leadership, strategic clarity, and administrative discipline laid the foundation for the Festival's scale and impact. His emphasis on structured



governance, intellectual depth, and ceremonial dignity ensured that the event reflected both academic excellence and institutional prestige.

Under his guidance, the Board of Directors provided strategic oversight, governance direction, and policy alignment, ensuring that the Festival achieved national relevance and global aspirations.

- Dr. Jay Soni – Member , Board Of Director
- Dr. Viraj Boriya – Member , Board Of Director
- Dr. Yogita Bhati – Member , Board Of Director
- Dr. Shidhi Nath Mishra – Member , Board Of Director
- Dr. Rajshree Gupta – Member , Board Of Director

The Board collectively strengthened the institutional framework through thoughtful decision-making, stakeholder engagement, and commitment to excellence.

Main Core Organising Committee

The successful execution of the Festival at such an expansive scale was made possible by the unwavering dedication and coordinated efforts of the Core Organizing Committee. This distinguished team served as the execution backbone, translating vision into reality through meticulous planning, operational discipline, and seamless collaboration.

- | | |
|------------------------|------------------------|
| • Dr. Harita Sachdeva | • Dr. Vanshika Dhankar |
| • Dr. Manya Dixit | • Dr. Muskan Jaiswal |
| • Dr. Anupam Jangra | • Dr. T. Jagadeesh |
| • Dr. Hrishikesh Pujar | • Dr. Bikal Shah |
| • Dr. Jaisal Singh | • Dr. Sunisha Manan |
| • Dr. Prathmesh Pandey | • Dr. Akshansh Gupta |
| • Dr. Ansh Sinsinvar | • Dr. Anjali Garg |
| • Dr. Rajat Verma | • Dr. Sunisha Manan |



Section XI

Media, Outreach and Documentation

Media, Outreach and Documentation

Section XIII records the communication strategy, public interface mechanisms, and archival processes associated with AyurMahotsava 2025. In addition to its academic, clinical, industrial, and policy-oriented deliberations, the festival functioned as a structured knowledge dissemination initiative aimed at extending the relevance of Ayurveda into the broader societal domain. This section documents the manner in which the proceedings achieved visibility beyond the physical venue through organised media engagement, national representation, systematic documentation, and institutional reflection.

The segment recognises communication, public outreach, and documentation as integral components of professional governance. These mechanisms ensure transparency, enable responsible dissemination of sectoral knowledge, and preserve an institutional record for long-term reference and continuity.

Media Coverage and Public Outreach

Ayur Mahotsava 2025 received extensive and sustained media coverage from approximately 74 media organisations, encompassing national and regional print publications, digital news platforms, broadcast channels, and sector-specific communication networks. The scale, diversity, and continuity of coverage across all three days of the festival reflected increasing public and professional engagement with Ayurveda as a preventive, holistic, and institutionally advancing healthcare system.

Professional facilitation of media interaction was supported by established press bodies, including the Press Club of Chandigarh and the Press Club of Panchkula, whose involvement strengthened structured communication outreach and ensured responsible reporting aligned with the academic, clinical, industrial, and policy dimensions of the programme.

Media Coverage of the Pre-Event Institutional Press Conference (10 December 2025)

As part of the structured communication strategy, a formal pre-event press conference was conducted on 10th December 2025 at the Confederation of Indian Industry (CII) Northern Region Headquarters, Chandigarh. The interaction formed the official media briefing preceding the National Ayurveda Festival.



The press conference was attended by more than 35 accredited media representatives, representing major regional and national print publications, digital news portals, and broadcast media platforms. Coverage of the press interaction was carried by several of the same leading media houses that subsequently covered the Festival proceedings.

The briefing was addressed by:

- Prof. (Vaidya) Rakesh Sharma — Former President, Ethics Board, NCISM, Ministry of AYUSH, Government of India
- Dr. Sanjeev Goyal — Registrar, Punjab Registration Board
- Dr. Rishabh Dixit — Organising Chairman, National Ayurveda Festival
- Foundation Directors: Dr. Jay Soni, Dr. Viraj Boriya, Dr. Shidhi Nath, Dr. Yogita Bhati, and Dr. Manya Dixit

The press interaction outlined:

- Institutional vision and objectives of the National Ayurveda Festival
- Academic and scientific programme structure
- Policy dialogue and industry participation frameworks
- Research engagement and scholarly components
- Exhibition design and enterprise participation
- Public health outreach initiatives

Media coverage of the press conference served to introduce the Festival's purpose, scope, and institutional orientation to the public prior to commencement. This early dissemination ensured informed reporting, strengthened awareness, and contributed to the strong media presence observed during the Festival days.

Media Coverage of the National Ayurveda Festival (12–14 December 2025)

During the three official days of the Festival — 12th, 13th, and 14th December 2025 — the proceedings received sustained and structured media coverage from approximately 74 newspapers and media houses. These included national and regional print publications, digital news platforms, television media representatives, and sector-specific communication networks.

The presence of such a large number of media organisations across all days reflected the national relevance of the Festival and the growing public and



professional interest in Ayurveda as a preventive, holistic, and institutionally advancing healthcare system. Media representatives documented the Festival in a continuous manner, covering not only ceremonial proceedings but also technical, academic, and professional components of the programme.

Coverage across the three days included:

- Inaugural ceremony and traditional ceremonial proceedings
- Distinguished lectures, keynote addresses, and master sessions
- Industry–Academia–Government dialogue platforms
- National Ayurveda Exhibition and enterprise participation
- Honours, awards, and recognition ceremonies
- Preventive health outreach activities and wellness engagement initiatives

Leading newspaper groups such as Dainik Bhaskar, The Tribune, Mid-Day, Punjab Kesari, and Amar Ujala featured reporting related to the Festival, along with numerous Haryana and North India regional publications and digital platforms. Professional facilitation of press interaction during the Festival was supported by the Press Club of Chandigarh and the Press Club of Panchkula, ensuring structured press access and responsible reporting aligned with the academic and institutional character of the event.

This sustained coverage across all three days ensured that the Festival's academic discourse, professional deliberations, and public health messages reached a broad audience beyond the physical venue, strengthening Ayurveda's visibility within national health and wellness dialogue.

National and International Participation

AyurMahotsava 2025 demonstrated a strong national character through extensive participation from delegates, institutions, and enterprises representing multiple states and regions across India. The diversity of representation reflected the breadth and maturity of the contemporary Ayurveda ecosystem and underscored the Festival's role as a national convergence platform rather than a regionally confined event.

Participants comprised practicing clinicians from institutional and independent clinical settings, academicians from Ayurveda colleges and universities, research scholars engaged in postgraduate and doctoral work, undergraduate students in professional training, industry leaders from pharmaceutical and wellness



enterprises, institutional representatives, startup founders, and policy-linked stakeholders associated with regulatory, educational, and sector development frameworks. This cross-sectional participation ensured representation from the full continuum of Ayurveda's knowledge, practice, production, and governance domains. Delegates from varied geographic regions brought with them region-specific clinical experiences, educational methodologies, research orientations, and manufacturing practices, enabling exchange of perspectives that might otherwise remain institutionally or regionally confined. Such interaction facilitated the sharing of clinical protocols, pedagogical approaches, research documentation practices, quality governance systems, and enterprise development models. These exchanges contributed to harmonisation of professional understanding and fostered mutual learning across institutional, academic, and industrial environments.

The presence of stakeholders from both established institutions and emerging enterprises strengthened dialogue between traditional knowledge custodians and innovation-driven participants. Academic representatives engaged with industry professionals on research collaboration and documentation practices, while clinicians interacted with educational institutions on curriculum relevance and clinical training needs. Industry representatives benefited from exposure to academic research priorities and practitioner requirements, promoting alignment between manufacturing systems and clinical application.

This broad-based national participation reinforced the Festival's function as a structured knowledge and coordination platform. By bringing together diverse stakeholders within a common institutional framework, AyurMahotsava 2025 contributed to the development of a cohesive national professional ecosystem in Ayurveda. The interaction fostered institutional connectivity, strengthened professional networks, and supported collective understanding of standards, documentation practices, and quality frameworks necessary for the system's sustainable growth.

Through this convergence, the Festival advanced not only knowledge exchange but also institutional alignment across regions and sectors, strengthening Ayurveda's position as a coordinated national healthcare discipline supported by academic depth, clinical integrity, industrial governance, and policy engagement.



Photographic Documentation of the Festival

A structured and methodical photographic documentation process was implemented throughout the duration of AyurMahotsava 2025 to establish a comprehensive institutional visual archive of the proceedings. The documentation process was conceived not merely as a record of events but as a formal archival exercise aligned with principles of transparency, accountability, and institutional continuity. Visual documentation forms an important component of professional event governance, enabling preservation of programmatic details, participant engagement, and ceremonial protocol for future reference.

The photographic coverage systematically captured all major dimensions of the Festival across ceremonial, academic, professional, and interactive segments. Particular emphasis was placed on documenting the Inaugural Ceremony, including traditional invocation, ceremonial lamp lighting, and formal proceedings involving dignitaries and institutional representatives. Academic sessions such as distinguished lectures, keynote presentations, thematic master sessions, and panel discussions were visually recorded to document the intellectual and professional engagement that formed the core of the Festival's knowledge-exchange mandate.

The National Ayurveda Exhibition was comprehensively documented through photographs of pavilion layouts, institutional displays, manufacturing demonstrations, research presentations, and enterprise showcases. These images serve as a visual representation of the sectoral ecosystem presented during the Festival, illustrating the integration of manufacturing systems, research documentation, technology tools, and preventive health initiatives.

Award ceremonies and recognition segments were also systematically documented, capturing the conferment of honours, participation of awardees, and ceremonial protocols. Such documentation provides a verifiable visual record of institutional recognition and professional acknowledgement processes.

Delegate Reflections and Institutional Perspectives

AyurMahotsava 2025 generated meaningful engagement across its academic sessions, exhibition platforms, policy dialogue segments, and professional interactions, leading to substantive reflections from participants and institutional representatives. The diversity of stakeholders present allowed for a broad range of perspectives that collectively highlighted the value of the Festival as a structured national platform for professional exchange.



Academic participants noted the importance of the scholarly environment created through paper presentations, lectures, and thematic discussions. Practicing clinicians emphasised the relevance of clinical master sessions and documentation-focused discussions. Engagement with experts and exposure to structured treatment protocols, diagnostic frameworks, and outcome reporting methods were recognised as contributing to professional skill enhancement. The opportunity to interact with academic and industry representatives also supported understanding of evolving standards in documentation and quality governance.

Industry participants observed that interaction with academicians and practitioners helped align manufacturing and product development processes with clinical requirements and research orientation. Dialogue within policy-focused sessions further supported awareness of regulatory frameworks and institutional coordination mechanisms.

Overall, delegate reflections indicated that the Festival not only facilitated knowledge exchange but also supported professional development, institutional alignment, and long-term collaboration across the Ayurveda sector.

Significance

Section XIII highlights the broader institutional value of communication, outreach, and documentation within the framework of AyurMahotsava 2025. The mechanisms recorded in this section contributed to strengthening the Festival's professional impact beyond its physical proceedings.

- **Enhanced Public Visibility of Ayurveda**

Structured media engagement ensured that academic deliberations, professional discussions, and policy dialogue reached a wider public audience, reinforcing Ayurveda's presence within national health and wellness discourse.

- **Institutional Transparency and Accountability**

Organised media interaction and systematic documentation contributed to transparent communication of programme objectives, proceedings, and outcomes, supporting responsible institutional governance.

- **Strengthening of Professional Credibility**

Coverage by established newspaper and media platforms reinforced recognition of the Festival as a serious academic and professional event, aligned with standards of institutional discourse.



- **Bridging Professional Knowledge with Community Awareness**

Public outreach initiatives connected technical discussions with community-oriented understanding of preventive healthcare, strengthening Ayurveda's societal interface.

- **Archival Preservation and Institutional Memory**

Photographic documentation and recorded proceedings created a permanent visual and informational archive, supporting historical record-keeping and reference for future initiatives.

- **National Integration of Stakeholders**

Media and outreach processes highlighted the Festival's national character, documenting participation from diverse regions and reinforcing Ayurveda as a coordinated national healthcare ecosystem.

- **Strengthening Institutional Coordination**

Communication platforms enabled interaction among academia, practitioners, industry representatives, and policy stakeholders, strengthening ecosystem-wide coordination.

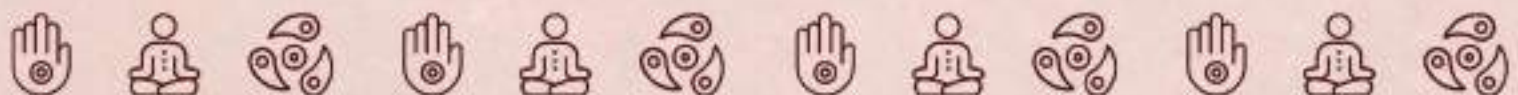
- **Support for Long-Term Institutional Continuity**

Documentation and outreach activities provide reference material and communication models that can guide future editions and institutional programmes.

- **Reinforcement of Ayurveda as a Knowledge-Driven Discipline**

The nature of coverage and documentation emphasised research orientation, quality governance, and academic dialogue, positioning Ayurveda within a structured professional framework.

VAIDYA
FOUNDATION



Section XII

Valedictory Proceedings and
Future Roadmap

Valedictory Ceremony Proceedings Report

National Ayurveda Festival

The Valedictory Ceremony of the National Ayurveda Festival marked the formal and dignified culmination of a landmark three-day national gathering dedicated to the advancement, scientific validation, industrial strengthening, and global positioning of Ayurveda. The ceremony symbolized not merely the conclusion of an event, but the consolidation of collective resolutions, academic deliberations, industrial collaborations, and social commitments undertaken throughout the festival.

Inaugural Context and Dignitary Presence

The Festival was inaugurated by the Hon'ble Governor, whose gracious presence elevated the stature of the event and reaffirmed institutional support for Ayurveda at the highest constitutional level. The occasion was further honored by the presence of Former Speaker, Hon'ble Assembly Speaker, senior policymakers, eminent academicians, veteran Vaidyas, industry leaders, research scholars, and distinguished guests from multiple states.

Throughout the festival, respected Guests of Honour and keynote dignitaries addressed the gathering, emphasizing policy integration, scientific rigor, educational reforms, quality standardization, and global outreach of Ayurveda. Their addresses collectively strengthened the resolve to position Ayurveda as a mainstream, evidence-driven, preventive healthcare system.

Scientific Sessions & Academic Deliberations

A series of high-level Scientific Sessions were conducted covering classical principles, contemporary clinical applications, Panchakarma standardization, integrative medicine, public health models, and research methodology. Eminent professors, researchers, and clinicians presented evidence-based discussions aimed at bridging classical knowledge with modern research frameworks.

Scientific Paper Presentations

The Festival witnessed extensive Scientific Paper Presentations from researchers, PG scholars, and institutional representatives across the country. Multidisciplinary



topics including lifestyle disorders, metabolic syndromes, musculoskeletal conditions, gastrointestinal disorders, preventive health, pharmacological validation, and clinical case studies were presented. Peer-review panels evaluated submissions based on scientific merit, methodology, and clinical applicability.

Poster Presentations

Poster Presentation sessions provided an interactive academic platform for emerging researchers and students to showcase preliminary studies, case documentation, innovation concepts, and literature reviews. The poster arena encouraged academic dialogue, constructive critique, and mentorship from senior scholars.

Ayurveda Tank of India – Startup Conclave

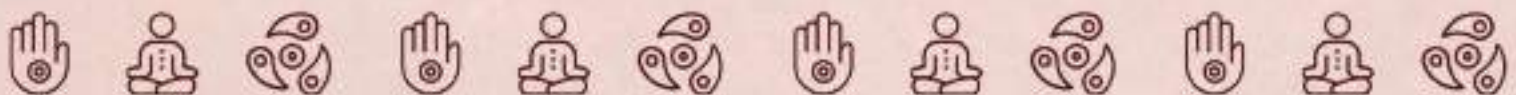
A major highlight of the Festival was “Ayurveda Tank of India” – a dedicated Startup Conclave designed to promote innovation and entrepreneurship within the Ayurveda ecosystem. Startups presented their business models across domains such as nutraceuticals, digital Ayurveda platforms, wellness tourism, Panchakarma infrastructure, herbal product innovation, and technology-enabled diagnostics. Industry experts, investors, and senior mentors provided evaluation, strategic feedback, and collaboration opportunities, encouraging scalable and sustainable business development within Ayurveda.

Industry Exhibition

The Ayurveda Exhibition showcased leading manufacturers, GMP-certified pharmaceutical companies, wellness brands, research institutions, Panchakarma equipment developers, and healthcare service providers. The exhibition facilitated B2B networking, regulatory awareness interactions, product demonstrations, export discussions, and institutional collaborations. It served as a structured marketplace fostering transparency, innovation, and quality benchmarking.

Health Camps & Community Outreach

As part of its social commitment, the Festival organized structured Health Camps focusing on preventive consultation, lifestyle disorder screening, and public awareness. These camps reinforced Ayurveda’s grassroots impact and community-centered approach to healthcare.



Blood Donation Camp

A Blood Donation Camp was conducted in collaboration with recognized medical authorities, reflecting the Foundation's commitment to social responsibility and humanitarian service. The initiative witnessed active participation from students, practitioners, and volunteers.

CME Programs & Continuing Education

Continuing Medical Education (CME) sessions were conducted to enhance clinical competencies, documentation practices, and research orientation among practitioners. These sessions emphasized outcome-based practice, SOP standardization, and interdisciplinary collaboration.

Valedictory Session Proceedings

During the Valedictory Session, a comprehensive summary of all academic, industrial, scientific, and social initiatives undertaken during the Festival was formally presented before the dignitaries and delegates. Rapporteurs from each vertical submitted consolidated outcome reports.

Awards and recognitions were conferred upon:

- Best Scientific Paper Presentations
- Outstanding Poster Presentations
- Innovative Startups from Ayurveda Tank of India
- Distinguished Industry Contributors
- Academic Excellence Awardees

The distinguished dignitaries, in their concluding addresses, highlighted the importance of structured governance, scientific documentation, institutional collaboration, and global expansion. They collectively encouraged transforming the deliberations into actionable national and international initiatives.

Declaration & Conclusion

The Valedictory Ceremony concluded with a formal declaration reaffirming commitment toward:

- Scientific validation and research excellence
- Industry quality enhancement and global compliance



Strategic Roadmap for Future Growth & Expansion of the Foundation

A Bold Vision for the Next 1000 Days

The Foundation proudly announces a structured 1000-Day Strategic Roadmap designed to systematically expand and institutionalise its mission at national and international levels.

The coming years are envisioned as a decisive expansion era dedicated to strengthening Ayurveda at grassroots, academic, industrial, and global levels. The roadmap follows a unified growth model integrating service, science, industry collaboration, and institutional development into one coordinated national and international movement.

Health Camp initiatives will expand through structured, theme-based national outreach drives focusing on lifestyle disorders, metabolic diseases, musculoskeletal conditions, women's health, and preventive wellness. Camps will follow standardized clinical documentation formats, outcome tracking systems, and referral linkages with partnered Ayurvedic hospitals and IPD centers. Mobile outreach units and rural integration programs will ensure accessibility in underserved regions. Each camp will function as both a treatment and preventive awareness platform contributing to evidence-based Ayurveda.

Blood Donation Camps will be institutionalized as recurring national social responsibility initiatives in collaboration with medical colleges, hospitals, universities, and corporate institutions. These programs will reinforce Ayurveda's social commitment while strengthening youth engagement and volunteer leadership networks.

Ayurveda Exhibitions will evolve into structured national and international platforms showcasing classical formulations, GMP-compliant manufacturing, research innovations, digital health technologies, Panchakarma infrastructure models, wellness tourism concepts, and startup initiatives. Curated exhibition standards will ensure quality participation, buyer facilitation, regulatory guidance, and product traceability systems to enhance global credibility.

B2B Meets will expand into zonal, national, and international buyer-seller networking platforms. The Foundation will conduct export readiness workshops, compliance sessions, distributor matchmaking forums, and institutional healthcare partnerships. Corporate wellness collaborations and hospital chain partnerships



will support Ayurveda's integration into mainstream healthcare. Trade facilitation cells will guide members on regulatory processes, documentation, and global market entry.

Scientific Lectures, CME Programs, and Academic Sessions will operate as a continuous academic excellence platform in collaboration with leading Ayurveda colleges, research institutions, and multidisciplinary universities. Certified CME programs, research methodology workshops, clinical documentation training, and evidence-based protocol development sessions will be conducted. A national digital repository will archive lectures, scientific's papers, white papers, and consensus documents generated through Foundation activities.

Scientific Sessions and Conferences will evolve into policy-influencing knowledge forums. The Foundation will promote multicentric clinical research collaborations, indexed conference proceedings, development of Standard Treatment Guidelines (STGs), and disease-specific research task forces. Data from camps and clinical centers will contribute toward measurable scientific output.

Leadership development within the Ayurveda fraternity will remain a priority. Youth chapters, student research councils, and professional mentorship platforms will nurture future academicians, clinicians, entrepreneurs, and policymakers. Alliances with reputed universities, research councils, healthcare organizations, and industry bodies will ensure credibility and sustainability.

Digitally, an integrated knowledge and networking portal will connect academicians, clinicians, manufacturers, researchers, startups, and institutional partners. Hybrid participation models will enable global engagement in lectures, exhibitions, B2B meetings, and conferences.

Nationally, state chapters will ensure uniform execution standards and measurable reporting. International collaborations with integrative medicine institutions, distributors, wellness tourism platforms, and academic bodies will position the Foundation as a credible global representative of Indian Ayurveda.

This roadmap represents expansion not merely in scale but in impact, documentation, scientific output, and global credibility. The Foundation commits to measurable outcomes, structured governance, institutional partnerships, and long-term ecosystem development that uplifts the entire Ayurveda fraternity.

Through service initiatives, academic rigor, industry collaboration, scientific documentation, and international outreach, the Foundation will continue to strengthen Ayurveda as a preventive, promotive, evidence-driven, and globally respected healthcare system.



Annexures

Our Sponsors & Partners

Title Sponsor



Platinum Sponsor



Co-Sponsor



Associate Sponsor



Gifting Partner

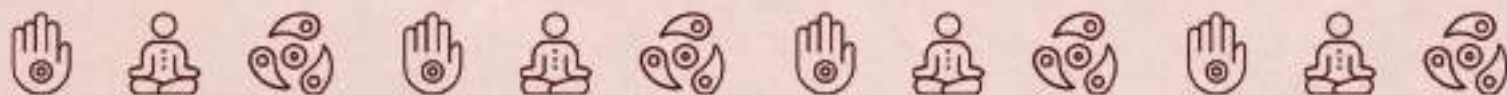


Knowledge Partner



**PRATYAKSH
AYURVEDA**
Let's Learn Logically

Silver Sponsor



National Ayurveda Festival & Expo 2025

Rooted in Wisdom. Rising with Vision.

The National Ayurveda Festival & Expo 2025 was envisioned not merely as an event, but as a strategic movement to consolidate scholarship, strengthen industry collaboration, encourage responsible innovation, and reinforce Ayurveda's rightful position in the global healthcare discourse.

Aligned with the guiding philosophy of our Foundation, this platform reflects our enduring commitment to intellectual rigor, institutional development, ethical entrepreneurship, and evidence-oriented expansion. Each dialogue, presentation, and partnership during these days has contributed to building a stronger, more structured, and future-ready Ayurveda ecosystem.

As we conclude this chapter, we do so with optimism and resolve to nurture leadership, foster collaboration, and advance Bharat's timeless science with dignity and direction.

The vision is clear. The foundation is firm.
The journey continues.

Office

Ayur Vaidya Eduhealth Foundation

492, Block 3, Old Palam Road, Dwarka Sector 15, New Delhi - 110078

www.ayurmahotsava.com

+91 8239677909 | +91 83205 61941

rishabh@ayurmahotsava.com | info@ayurmahotsava.com

